www.ghoonghatkibagawat.com ghoonghatkibagawat37@gmail.com ghoonghatkibagawat.com

UP/HIN/1999/1282

घूँघट की बगावत

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित हिन्दी (साप्ताहिक समाचार पत्र)

वर्ष : 23 | अंक : 47 | गोरखपुर | 02 जून 2024 | पृष्ठ : 08 | मूल्य: 2/-

लोकसभा चुनाव 2024: सातवें चरण में 59.45 फीसदी मतदान



नई दिल्ली। एक जून को सातवें और आखिरी चरण का मतदान खत्म होने के साथ भारत में लोकसभा चुनाव संपन्न हो गए हैं और कुल 543 सीटों के लिए उम्मीदवारों की किस्मत ईवीएम में कैद हो गई है। सातवें चरण में आठ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 57 सीटों पर वोट डाले गए। शनिवार देर शाम जारी एक बयान में चुनाव आयोग ने बताया कि आखिरी चरण में रात 8.45 बजे तक 59.45 फीसदी मतदान हुआ। आखिरी चरण में 8.45 बजे तक पंजाब की सभी 13 सीटों पर 55 .86 फीसदी मतदान हुआ। वहीं उत्तर प्रदेश की 13 लोकसभा सीटों पर 55.60 फीसदी वोट डाले गए, बिहार की 8 लोकसभा सीटों पर 50.79 फीसदी और पश्चिम बंगाल की 9 लोकसभा सीटों पर 69.89 फीसदी मतदान हुआ। वहीं ओडिशा की 6 लोकसभा सीटों पर 63.57 फीसदी और हिमाचल प्रदेश की चार लोकसभा सीटों पर 67.53 फीसदी वोट डाले गए। झारखंड की तीन सीटों पर 69.59 फीसदी मतदान हुआ। केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ में एक सीट पर 62.80 फीसदी वोट डाले गए।





सेडिका गोरखपुर मेंमतदान के बाद शेल्फी लेते मतदाता



लोकतंत्र महोत्सव 2024:मतदान के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, रविकिशन सपत्नीक मीडिया से रूबरू होते



चढते सूरज के साथ बढ़ता रहा मतदान प्रतिशत

देवरिया (जीकेबी)। देवरिया लोकसभा का चुनाव सुबह सात बजे से शांतिपूर्ण माहौल में शुरू हुआ है। डीएम अखंड प्रताप सिंह व एसपी संकल्प शर्मा पूरी टीम के साथ जिले के विभिन्न मतदान केंद्र का निरीक्षण कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मतदाताओं से शांतिपूर्ण माहौल में मतदान करने की अपील की।

सुबह नौ बजे से लेकर शाम पांच बजे तक के आंकड़ों पर गौर करें तो पथरदेवा विधानसभा शुरू से टॉप पर रहा। सुबह नौ बजे पथरदेवा विधानसभा का मत प्रतिशत 14.53 प्रतिशत के करीब रहा, जो 11 बजे बढ़कर 29.67 प्रतिशत हो गया। यहां मतदाताओं को सूर्य की तपिश व उमस भरी गर्मी भी नहीं डिगा सकी। दोपहर एक बजे पथरदेवा विधानसभा का मतदान प्रतिशत 41.23 व शाम तीन बजे 49. 2 प्रतिशत पहुंच गया। शाम होते-होते पथरदेवा का मतदान प्रतिशत वर्ष 2019 में जिले में हुए कुल मतदान प्रतिशत को छूने के करीब पहुंच गया। शाम पांच बजे पथरदेवा का मतदान 56.11 प्रतिशत के करीब रहा। शाम छह बजे यहां का मतदान 57.01 प्रतिशत रहा।

इसी तरह देवरिया लोकसभा की देवरिया सदर सीट की बात करें तो सुबह नौ बजे 13.89, 11 बजे 27.5, एक बजे 38.15, तीन बजे 45. 1, शाम पांच बजे 52.6 व शाम छह बजे 54.25 प्रतिशत ही रहा। सुबह में 11 बजे तक देवरिया सदर का मतदान प्रतिशत ठीक चला। इसके बाद सूर्य की तपिश ने मतदाताओं के पैर घरों से बाहर निकलने से रोक दिया, जो शाम पांच बजे तक जारी रहा। देवरिया लोकसभा की पांच सीटों के मतदान प्रतिशत पर नजर डालें तो पथरदेवा के बाद रामपुर कारखाना, तमकुही, फाजिलनगर का मतदान प्रतिशत देवरिया सदर से ठीक रहा।



हिमांचल के राज्यपाल शिवप्रताप शुक्ल ने सपत्नीक किया मतदान



लोकसभा चुनाव-2024 के दौरान सुरक्षा कर्मियों ने भी बरती पूरी सतर्कता

लोकतंत्र महोत्सव2024: शहरियों पर भारी ग्रामीण

गोरखपुर (जीकेबी)। पिछली बार की ही तरह इस चुनाव में भी मजबूत लोकतंत्र की चिंता शहर के मतदाताओं से ज्यादा ग्रामीणों ने ही की। गोरखपुर लोकसभा क्षेत्र के तहत आने वाली सभी पांच विधानसभाओं में शहर विधानसभा के मतदाता बाकी चारों विधानसभाओं से काफी पीछे रह गए। यहां सबसे कम 47.69 प्रतिशत वोट पड़े, जो पिछले चुनाव से करीब पांच प्रतिशत कम है। शुरुआती दो घंटे में ही शहरी पिछड़े तो फिर मतदान खत्म होने तक बढ़त नहीं बना सके। वहीं पिपराइच के मतदाता एक बार फिर अपना झंडा बुलंद रखते हुए 60.48 प्रतिशत मतदान के साथ सबसे अव्वल हैं।

पिछले 2019 के लोकसभा चुनाव में भी गोरखपुर शहर में सबसे कम 53.02 प्रतिशत और पिपराइच विधानसभा में सबसे अधिक 64.87 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया था। बांसगांव लोकसभा क्षेत्र की बात करें तो यहां की पांच विधानसभाओं में रुद्रपुर के मतदाताओं ने सबसे अधिक जागरूकता दिखाई। यहां 55 .90 प्रतिशत वोट पड़े। वहीं मतदान में सबसे फिसड्डी बांसगांव विधानसभा के वोटर रहे। यहां कुल 45.50 प्रतिशत मतदाताओं ने ही अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया।

माक पोल की प्रक्रिया समाप्त होने के बाद सुबह सात बजे जैसे ही मतदान शुरू हुआ गोरखपुर ग्रामीण, पिपराइच, सहजनवां, कैंपियरगंज के कई बूथों पर कतार लग गई। पहले दो घंटे में यानी सुबह नौ बजे तक ही सहजनवां में करीब 14.60 प्रतिशत, पिपराइच में 13.75 और कैंपियरगंज में 13.07 प्रतिशत मतदान हो गया। वहीं शहर विधानसभा में 11.47 प्रतिशत ही वोट पड़ सके। शहर के पाश इलाके माने जाने वाले बेतियाहाता के सेंट एंड्रयूज डिग्री कालेज, सेंट एंड्रयूज इंटर कालेज, सिविल लाइन के कार्मल स्कूल में बने बूथों पर गिनती के ही वोटर पहुंचे। यहां मतदान समाप्त होने तक सुस्ती बरकरार रही जबकि गोरखपुर विश्वविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों से लेकर प्रशासनिक अधिकारियों, कर्मचारियों समेत विभिन्न सरकारी विभागों में कार्यरत लोग और बड़े व्यापारी आदि यहां के मतदाता हैं। जिले की दोनों ही लोकसभा क्षेत्रों में सुबह सात से 11 बजे तक मतदान की रफ्तार ठीक रही। इसके बाद जैसे-जैसे सूरज चढ़ता गया बूथों पर धीरे-धीरे भीड़ कम होने लगी। एक बजे से तीन बजे के बीच तो कई बूथों पर सन्नाटा पसरा रहा।

गोरखपुर लोकसभा क्षेत्र में इस बीच महज सात प्रतिशत तो बांसगांव लोकसभा क्षेत्र में करीब छह प्रतिशत ही मतदान हुआ।

तीन बजे के बाद एक बाद फिर बूथों पर थोड़ी रौनक लौटी । इन दो घंटों के बीच गोरखपुर में आठ प्रतिशत तो बांसगांव लोक सभा क्षेत्र में करीब सात प्रतिशत वोटिंग हुई। आखिरी एक घंटे में गोरखपुर में दो प्रतिशत और बांसगांव में करीब डेढ़ प्रतिशत से भी कम वोट पड़े।



चुनाव आयोग की तमाम कोशिशों के बाद भी
धरे रह गए अरमान

पडरौना, कुशीनगर(जीकेबी)। चुनाव आयोग की तमाम कोशिशों के बाद भी बहुत से लोग वोट नहीं डाल सके। शहर के तीन हजार से अधिक लोगों का मतदाता सूची से नाम गायब होने से वे अपने मताधिकार से वंचित रह गए। वोट न डाल पाने का मलाल उनके चेहरे पर साफ झलक रहा। निर्वाचन व्यवस्थाओं को कोसते नजर आए। शहर के चर्चित चिकित्सक ने सिस्टम पर सवाल खड़ा एक्स पर वीडियो अपलोड किया है। शहर के सभी बूथों पर वोटर लिस्ट में नाम नहीं होने से वोटरों की बीएलओ से तकरार हुई। सुरक्षाकर्मियों के हस्तक्षेप से किसी तरह मामला शांत हुआ। शहर के गोस्वामी तुलसीदास इंटर कॉलेज में 277 से 282 तक बूथ बनाया गया था। इन पर करीब 3500 वोटरों के नाम की सूची थी। करीब 1110 वोटरों का नाम मतदाता सूची में नहीं था। बूथ पर अपने बेटे के साथ तनीज फातमा पहुंचीं, लेकिन मतदाता सूची में नाम नहीं होने से लौटना पड़ा। ओंकार वाटिका के ओंकार पांडेय के परिवार के पांच लोगों का नाम सूची से गायब था। उदित नारायण डिग्री कॉलेज के बूथ पर पहुंचे लाजपत नगर निवासी धर्मेंद्र गुप्ता, नरेंद्र, मनोज जितेंद्र, गुड़िया, पुनीता समेत 300 से अधिक मतदाताओं को दोपहर 2 बजे तक बिना मतदान किए बूथों से लौटना पड़ा। महाराजा हेमचंद विक्रमादित्य कालोनी निवासी कृष्णावती देवी, एस जायसवाल, आदित्य कसौधन, शीला देवी, उज्ज्वल गुप्ता, अनीता गुप्ता नगर के जूनियर हाईस्कूल पर मतदान करने गए थे, लेकिन नाम नहीं होने से लौट गए। जगदीशपुरम कॉलोनी के डॉ. संदीप अरुण श्रीवास्तव ने बताया कि 18 साल की उम्र से अब तक किसी भी मतदान से वंचित नहीं था। लेकिन, इस बार मतदाता सूची से नाम ही गायब कर दिया गया है। मतदान नहीं करने का मुझे काफी तकलीफ है। बीएलओ भी सीधे मुंह बात नहीं कर रहे हैं। इसकी शिकायत मैंने निर्वाचन आयोग से की है। शहर के अलावा ग्रामीण क्षेत्र के बूथों पर भी मतदाता सूची से नाम गायब होने और नाम में गड़बड़ी के चलते कई लोग वोट नहीं दे सके। पीठासीन अधिकारी बीएलओ की गड़बड़ी बताकर बूथ से लौटा दे रहे थे। शहर के बीएलओ प्रभुनाथ पांडेय ने बताया कि मेरी तरफ से कोई गलती नहीं है। हमने सभी मतदाताओं का फार्म जमा कर दिया था। मेरे पास इसका रिकॉर्ड भी है। इसकी जानकारी मैंने उच्चाधिकारियों को दे दी है।

लोकसभा चुनाव के लिए शनिवार को मतदान के लिए पहुंचे कई मतदाताओं का नाम मतदाता सूची से गायब था। ऐसे मतदाताओं ने नाराजगी जताते हुए घर चले गए। सुकरौली बूथ संख्या 172 पर मतदान करने आए प्रज्ज्वल और प्रियांशु शुक्ला का नाम मतदाता सूची में नहीं था। इसी तरह क्षेत्र के परसिया गांव के बूथ संख्या 181 पर मतदान करने आए अमरजीत भारती और धनेश का नाम भी वोटर लिस्ट में नहीं था। इन लोगों ने नाराजगी जताते हुए बिना मतदान किए घर चले गए।

लोकतंत्र के महापर्व में शनिवार को कुशीनगर विधानसभा के कसया नगर में वोटर लिस्ट में नाम नहीं आने से काफी परेशान रहे। लोगों का आरोप था कि बीएलओ के मनमाने रवैया से नाम कट गया है। तो वही कुछ लोगों का नाम सही रहा तो पिता का नाम गलत था। फोटो भी काफी मतदाताओं का इधर उधर था। मतदाता एजेंटों के पास चक्कर लगाते हुए दिखाई दिए। नगर के पंडित दीन दयाल नगर निवासी मंजूर खान के फैमिली का नाम नहीं था। उनके पत्नी और तीन बेटो और एक बेटी में केवल एक बेटे हाफिज का नाम था। बाकी बूथ पर परेशान होकर चले गए।ग्यासुददीन ने बताया कि फोटो किसी और का नाम मेरा था। एनूदीन ने बताया कि मेरा नही है। सैफ अली ने बताया कि मेरी एक बहन और दौ भाई और दो भाभीयों का नाम नही आया है । हम लोग कई बार फार्म भरके भेजे उसके बावजूद भी नाम नही आया है। मुन्नी देवी का नाम कट जाने से निराश होकर लौटी। इस तरह से सैकड़ो लोगों का नाम कटने की शिकायत थी।

पास इलाकों में मतदान केंद्रों पर सुबह शाम मतदाता उमड़े , जबकि दोपहर में सन्नाटा रहा। वहीं मिश्रित और मुस्लिम आबादी वाले क्षेत्रों में मतदान को लेकर ज्यादा उत्साह दिखाई दिया। यहां दिनभर कतार लगी रही। दोपहर में भी लोग बूथों पर पहुंचे और मतदान किया। कुशीनगर विधानसभा क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में मतदान के लिए काफी उत्साह दिखाई दिया। गांव में लोगों की मतदान की कतार सुबह से ही लंबी लगनी शुरू हो गई जो पूरा दिन तक चला। लेकिन वही मतदान शहरों में सुबह लोग एकाएकी निकलते दिखाई दिया। विधानसभा के टेकुआटार , रामबर बुजुर्ग, गोबरही, अहिरौली राजा,पतया,परेवाटा नरकटिया बुजुर्ग, खड्डा, नटवलिया, भठही बाबू में सुबह से ही मतदान करने के लिए लंबी लाइन मतदाताओं की देखने को मिली। वही उसके अपेक्षा नगरपालिका परिषद कुश. ीनगर के वार्डों में मतदान की कतार में लोगों की लंबी लाइन नही देखने को मिली। इससे यह अनुमान लगाया जा रहा है कि मतदान को लेकर ग्रामीण क्षेत्र में काफी उत्साह रहा।

काबीना मंत्री की दो बहुओं का नाम मतदाता सूची से लापता



गोरखपुर (जीकेबी। पादरी बाजार इलाके के जंगल सालिकराम निवासी प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री डॉ. संजय कुमार निषाद की दो बहुओं का नाम मतदाता सूची में नहीं था। बीएलओ की तरफ से कैबिनेट मंत्री और परिवार के अन्य सदस्यों की पर्ची उन्हें दे दी गई थी। लेकिन, बहुओं की पर्ची नहीं मिलने पर उनके द्वारा आलाधिकारियों से शिकायत की गई। मतदान से दिन बीएलओ और तहसील कर्मियों ने घर जाकर दोनों बहुओं की मतदाता पर्ची उन्हें दी। इसके बाद सभी मतदान कर सके। संजय निषाद के बड़े पुत्र डॉ अमित कुमार निषाद की पत्नी आरती कश्यप व चौरीचौरा के विधायक सरवन निषाद की पत्नी नेहा निषाद का नाम मतदाता सूची में नाम नही था। वहीं, कैबिनेट मंत्री और उनके परिवार के सदस्यों की मतदान पर्ची न मिलने से इस मामले की शिकायत जिलाधिकारी से कर दी। इधर, जंगल सालिकराम और शिवपुर सहबाजगंज में 8 बीएलओ हैं। तीन दिनों से कैबिनेट मंत्री के घर के पास संगम चौराहे पर बीएलओ कैंप लगाकर लोगों की वोटर पर्ची बना रहे थे। लेकिन, फिर भी परिवार से संपर्क कर सभी की मतदान पर्ची उन्हें नहीं दी गई। मतदान से वंचित न हो, मंत्री संजय निषाद ने इस मामले में जब शिकायत की तब जाकर उनकी पर्ची बनी। इसके बाद जाकर उन्होंने अपना मतदान किया।

स्कूल में पान व पान मसाला खाकर आना प्रतिबंधित



तंबाकू और तंबाकू उत्पाद सेहत के लिए हानिकारक हैं। यह जानते हुए भी कुछ अध्यापक इसका उपयोग स्कूल टाइम में करते हैं ऐसी सूचना मिल रही है साथ ही स्कूल के आसपास दुकानदार इनकी बिक्री कर रहे हैं। ऐसे में पढ़ने वाले बच्चों पर बुरा असर पड़ सकता है। सभी खंड शिक्षा अधिकारियों को जांच कर कार्रवाई के लिए निर्देशित किया गया है। वह खुद स्कूल खुलने पर जांच करेंगे।

श्रवण गुप्ता,
बेसिक शिक्षा अधिकारी

महराजगंज(जीकेबी)। तंबाकू निषेध दिवस से एक दिन पहले बीएसए ने सभी खंड शिक्षा अधिकारियों के लिए निर्देश जारी किया है। कहा गया है कि बच्चों पर किसी प्रकार का दुष्प्रभाव न पड़े इसके लिए तंबाकू उत्पादों का प्रयोग स्कूल परिसर में वर्जित रहेगा। कोई शिक्षक पान, पान मसाला या तंबाकू उत्पाद का सेवन स्कूल परिसर में करता मिलता है तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाए। जुलाई से सभी स्कूलों का निरीक्षण कर रिपोर्ट देने के लिए निर्देशित किया गया है।

स्कूल के आसपास अगर तंबाकू उत्पाद की बिक्री होती मिले तो पुलिस को सूचित करते हुए विभाग को जानकारी देने के लिए कहा गया है। 31 मई को तंबाकू निषेध दिवस मनाया जाता है। इसके पीछे मंशा है कि मुख कैंसर से लोग बचे रहें तथा तंबाकू सेवन से उनकी सेहत पर कोई बुरा असर न पड़े। इसे लेकर बेसिक शिक्षा विभाग भी सक्रिय हो गया है। स्कूल में शिक्षक पान या तंबाकू उत्पाद का उपयोग न करें इसके लिए शिक्षकों की जांच पड़ताल खंड शिक्षा अधिकारी करेंगे।

बीएसए के निर्देश के बाद जिले के 1705 स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षक पान या तंबाकू उत्पाद का उपयोग तो नहीं कर रहे इसपर जांच होगी। खंड शिक्षा अधिकारी इसकी जांच करेंगे तथा कोई इस दायरे में मिलता है तो कार्रवाई भी करेंगे। विभाग की मंशा है कि पढ़ने वाले बच्चे इससे प्रभावित होकर उपयोग न सीख पाएं। इसके अलावा स्कूल से 200 मीटर की दूरी पर किसी दुकान पर पान मसाला, तंबाकू, सिगरेट की बिक्री होती मिलती है तो स्थानीय पुलिस व खाद्य सुरक्षा विभाग को सूचित कर बिक्री बंद कराएंगे। किस क्षेत्र में ऐसी कितनी दुकानें बंद कराई गई इसकी रिपोर्ट भी बीएसए कार्यालय को भेजनी होगी

दद्दन यादव प्रकरण

मानवाधिकार आयोग ने दिये जांच के आदेश



•11 जुलाई तक पेश होगी रिपोर्ट

देवरिया(जीकेबी)। दद्दन यादव की मौत के मामले में मानवाधिकार आयोग ने संज्ञान लेते हुए देवरिया के डीएम और एसपी को जांच के आदेश दिए हैं। साथ ही 11 जुलाई 2024 तक जांच रिपोर्ट सौंपने को कहा है।

बरहज थाना अंतर्गत सतराव चौकी के एक दारोगा ने मामूली विवाद होने पर एक दद्दन यादव की पिटाई की थी। आरोप है कि इस पिटाई से उसकी मौत हो गई। वहीं, मामले में अब मानवाधिकार आयोग ने संज्ञान लेते हुए देवरिया के डीएम और एसपी को जांच के आदेश दिए हैं। साथ ही 11 जुलाई 2024 तक जांच रिपोर्ट सौंपने को कहा है। बता दें कि पिछले दिनों बरहज थाना अंतर्गत सतराव चौकी के दरोगा वीरेंद्र कुशवाहा और अन्य पुलिसकर्मियों ने दद्दन यादव को बुरी तरह पीट दिया था, जिससे उसकी इलाज के द्वारा दौरान मौत हो गई थी। इस मामले की शिकायत इलाहाबाद हाईकोर्ट के अधिवक्ता डॉ. गजेंद्र सिंह यादव ने मानवाधिकार आयोग में दर्ज कराई थी, जिस पर संज्ञान लेते हुए आयोग ने जांच के आदेश दिए हैं।अधिवक्ता का कहना है कि हमें उम्मीद है कि जांच निष्पक्ष होगी और दोषियों पर कार्यवाही होगी। जांच में प्रशासन का पूरा सहयोग किया जाएगा, लेकिन अभी तक आरोपी पुलिसकर्मियों की गिरफ्तारी न होना आश्चर्य की बात है। जांच से पहले उक्त लोगों की गिरफ्तारी होनी चाहिए, ताकि वह जांच व साक्ष्यों को प्रभावित न कर सकें। यदि समय रहते गिरफ्तारी नहीं होती है तो हम जल्द ही उच्च न्यायालय जाकर गिरफ्तारी और उचित जांच की मांग करेंगे।

अधिवक्ता ने कहा कि मृतक की तीन बेटियां हैं तथा परिवार में वह अकेला कमाने वाला था। अत: जिला प्रशासन से उम्मीद की जाती है कि पीड़ित परिवार की आर्थिक मदद भी की जाए,

संस्थागत प्रसव बढ़ाने पर जोर

महराजगंज (जीकेबी)। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सदर के सभागार में बृहस्पतिवार को आशा, संगिनी और एएनएम की बैठक हुई। इसमें उन्हें शासन की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने और शहरी क्षेत्र में शुरू आभा कार्ड व आयुष्मान भारत कार्यक्रम के तहत सर्वेक्षण का कार्य शुरू कराने का निर्देश दिया गया। संस्थागत प्रसव बढ़ाने पर भी जोर दिया। बीसीपीएम लवली वर्मा ने कहा कि आमजन तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने वाली आशा मजबूत कड़ी है। ऐसे में आशा अपनी जिम्मेदारी समझें और उसका शत-प्रतिशत निर्वहन करें। नवजात शिशु गृह भ्रमण कार्यक्रम में भी इमानदारी से कार्य करें। कहा कि जो भी आशा निष्क्रिय हैं, उनके खिलाफ कार्रवाई का आदेश हुआ है। ऐसे में सभी आशा कार्य पर विशेष ध्यान दें और अपनी रिपोर्टिंग करें। जिला प्रतिरक्षण अधिकारी डॉ. केपी सिंह ने कहा कि संस्थागत प्रसव (सरकारी अस्पताल में प्रसव) को बढ़ाया जाए। ऐसे में आशा गांवों में गर्भवती महिला. ओं को सरकार की योजनाओं के बारे में बताएं। उन्हें क्या लाभ मिल सकता है इस पर भी जागरूक करें।



मतदान के बाद मतदाता की शेल्फी जोन से यह तस्वीर

पुलिस की कार्यशैली से आक्रोशित लेखपालों ने दिया धरना

लेखपाल को बंधक बनाकर पीटने के मामले में गिरफ्तारी न होने से हैं खफा

हरैया (जीकेबी)। लेखपाल को जबरन उठाकर ले जाने और पिटाई कर छोड़ने के मामले में आरोपियों पर केस दर्ज करने में हीलाहवाली और गिरफ्तारी न होने से खफा लेखपालों ने बृहस्पतिवार को कार्य वहिष्कार करते हुए हरैया तहसील में धरना शुरू कर दिया। लेखपाल थानेदार की कार्यशैली को लेकर आक्रोशित हैं। उनका आरोप है कि पुलिस आरोपियों से मिलकर मामले का अल्पीकरण करने में जुटी है।

उधर, आरोपियों का कहना है कि कार्य के बदले रुपये मांगने पर लेखपाल के विरुद्ध आईजीआरएस पोर्टल पर शिकायत की गई थी। इसके बाद लेखपाल खुद को बचाने के लिए फर्जी कहानी रचकर फंसा रहे हैं। हालांकि, पुलिस ने हरैया तहसील के माझिल गांव के लेखपाल प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव निवासी मड़वानगर थाना कोतव. ाली की तहरीर पर विशाल उर्फ मोहन दूबे निवासी माझिल गांव थाना छावनी, शिवम तिवारी निवासी सहजौरा पूरे दुखी और तीन अन्य अज्ञात पर बलवा, मारपीट, सरकारी कागज फाड़ कर कार्य में बाधा आदि धाराओं में केस दर्ज कर छानबीन शुरू की है।

बुधवार को लेखपाल ने आरोप लगाया था कि शाम करीब 4:30 बजे वह तहसील परिसर से माझिल गांव निवासी विशाल दुबे बस्ती चलने को कहकर अपनी कार में बैठा लिया। वह बभनान चौराहे के पास ले गया, जहां कार में कुछ और लोग भी बैठ गए। आरोप है कि तमंचे व चाकू के बल पर उसे चुप रहने की धमकी देते हुए अज्ञात स्थान पर ले गए। कार से बाहर निकाल कर लात-घूंसों से मारा पीटा और छोड़कर चले गए।

गिरफ्तारी न होने तक कार्य बहिष्कार करेंगे लेखपाल उप जिलाधिकारी/तहसीलदार को ज्ञापन में उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ उप शाखा हरैया की तरफ से कहा गया है कि लेखपाल प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव के साथ कुछ लोग आए और तहसील से उठाकर गाड़ी में बैठाकर जबरदस्ती उनके कनपटी पर तमंचा सटाकर और धारदार चाकू गले पर रखते हुए सुनसान एरिया में ले जाकर के लात-घूसों से पीटकर अधमरा करके छोड़ें। किसी तरीके से अपनी जान बचाकर वह घर पहुंचे।

प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव के साथ तमाम लेखपाल साथी मंगलवार शाम से अब तक थाने और तहसील का चक्कर काटते रहे लेकिन अभी तक अभियुक्तों की गिरफ्तारी नहीं हो पाई। यही नहीं मार खाए हुए लेखपाल का अभी तक मेडिकल तक नहीं कराया गया। इससे आरोपियों का हौसला बढ़ गया है जबकि लेखपालों का मनोबल टूट गया है।

मजबूरन निर्णय लिया गया है कि अभियुक्तों की गिरफ्तारी नहीं होने तक लेखपाल साथी कार्य का बहिष्कार करेंगे जिसकी संपूर्ण जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।

हैंडपंप लगाने को लेकर मारपीट में अधेड़ की गई जान

जौरा बाजार, कुशीनगर (जीकेबी)। दस दिन पूर्व लगे हैंडपंप का लेकर उपजे विवाद में बृहस्पतिवार को पटीदारों में मारपीट हो गई। इसमें अधेड़ की मौत हो गई। आरोपी फरार हो गए। पीड़ित परिवार ने हत्या का आरोप लगाते हुए कार्रवाई की मांग की। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। तनाव को देखते हुए गांव पर पुलिस की नजर है।

चौरा खास थाना क्षेत्र के नदवा विशुनपुर गांव निवासी महाजन सैनी (50) के दरवाजे पर करीब 10 दिन पहले हैंडपंप लगा था। पटीदार सत्यदेव सैनी हैंडपंप का विरोध कर रहा था। इसी को लेकर दोनों में विवाद चल रहा था। पुलिस तक भी यह मामला पहुंचा था। लेकिन, पुलिस ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। बृहस्पतिवार की सुबह करीब सात बजे दोनों पक्षों में मारपीट हो गई। मारपीट के दौरान महाजन सैनी की मौत हो गई। हत्या की सूचना मिलने पुलिस गांव पहुंची लेकिन आरोपी फरार हो गए थे। पुलिस एक व्यक्ति को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। पुलिस ने शव को पोस्टमा. र्टम के लिए भेज दिया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मौत की वजह की पुष्टि नहीं हो सकी। विसरा सुरक्षित कर लिया गया है। इंस्पेक्टर चंद्रभूषण प्रजापति ने बताया कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मामले की जांच की जा रही है। जिसकी मौत हुई है। वह पहले से बीमार था। ऐसा गांव वालों का कहना है। लेकिन, पीड़ित परिवार जो तहरीर देगा ।उसके आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

शादी के दबाव पर युवक ने ट्रेन के आगे कूदकर दी जान

रामकोला। निकाह के लिए दबाव बनाने पर युवक ने ट्रेन के आगे कूदकर जान दे दी। आपत्तिजनक हालत में युवती के साथ पकड़े जाने पर पंचों का फैसला युवक को मंजूर था लेकिन, घर वाले इसका विरोध कर रहे थे। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। युवक की बाइक रेलवे लाइन किनारे गड्ढे में मिली।

रामकोला थाना क्षेत्र के सपहा नौकाडीह निवासी मंसूर का बाइस वर्षीय पुत्र मैनूद्दीन विदेश रहता था। दो माह पहले घर आया था। उसका एक युवती संबंध था। शुक्रवार की शाम युवती के साथ आपत्तिजनक हाल में पकड़ा गया था। युवती के परिजनों ने निकाह करने का दबाव बनाया और पुलिस कार्रवाई की धमकी दी। पंचायत में पंचों ने मैनूद्दीन का निकाह युवती से करने का फैसला सुनाया। मैनूद्दीन को पंचों को फैसला मंजूर था। मामला घर तक पहुंचा तो उसके पिता मंसूर नाराज हो गए। दोनों तरफ से घिरता देख युवक मोटरसाइकिल लेकर घर से निकल गया। रात भर पुलिस और परिजन उसको ढूंढ़ते रहे। शनिवार सुबह उसका क्षत-विक्षत शव रामकोला राम जानकी मंदिर के सामने रेलवे ट्रैक पर मिला। जीआरपी ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मैनूद्दीन के पिता मंसूर का आरोप है कि निकाह के लिए दबाव बनाने पर युवक तनाव में आ गया और ट्रेन के सामने कूदकर जान दे दी। इंस्पेक्टर विनय कुमार सिंह ने बताया कि तहरीर मिलने पर मामले की जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

दो दिन बाद जाने वाला था विदेश

-मैनुद्दीन को दो दिन बाद विदेश जाना था। उसका वीजा भी आ गया था। वह शुक्रवार को युवती के घर गया था। घर वाले दोनों को आपत्तिजनक हालत में देख लिए। युवती के घ ार वालों ने युवक के परिजनों से उलाहना देने के बाद पंचायत बुला दी। युवक निकाह के लिए तैयार भी हो गया लेकिन, घर वालों ने मना कर दिया।







जनता जनार्दन का आशीर्वाद भाजपा को प्राप्त हो रहा : योगी आदित्यनाथ

(नि.प्र.),

गोरखपुर (जीकेबी)। लोकसभा क्षेत्र गोरखपुर के चुनाव में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार सुबह सात बजे पुराना गोरखपुर क्षेत्र के इंग्लिश मीडियम प्राथमिक विद्यालय गोरखनाथ (कन्या) के बूथ संख्या 223 पर मतदान किया। पहले मतदान फिर जलपान के मंत्र को साकार करते हुए वह अपने मताधिकार का प्रयोग और लो. कतांत्रिक कर्तव्य का निर्वहन किया। उन्होंने अपने बूथ का पहला मतदान किया। इसके पहले 2019 के लोकसभा, 2022 के विधानसभा चुनाव और 2023 के नगर निगम चुनाव में भी अपने बूथ के प्रथम मतदाता बने थे। तदान के लिए मुख्यमंत्री शुक्रवार को ही गोरखपुर पहुंच गए थे। बता दें कि गोरखपुर सीट पर भाजपा के रवि किशन, सपा की काजल निषाद और बसपा के जावेद अशरफ के बीच मुकाबला है। मतदान के बाद उन्होंने मीडियाकर्मियों को संबोधित कर सातवें चरण के सभी संसदीय क्षेत्रों के मतदाताओं से मतदान की अपील की। उन्होंने कहा कि अंतिम चरण का चुनाव आज हो रहा है। देश के आठ राज्यों के 57 सीटों पर मतदान हो रहा है। जिसमें उत्तर प्रदेश की 13 सीटों पर भी आज पूर्वी उत्तर प्रदेश में मतदान हो रहा है। पिछले दो महीने ढाई महीने से अधिक समय से जो देश के अंदर आमजन की आकांक्षाओं को पुरा करने के लिए जनता जनार्दन की जो अपेक्षा थी उसके रूप विभिन्न राजनीतिक दलों ने जनता जनार्दन के सामने अपने अपने मुद्दे रखे। अपनी सरकारों के समय के कार्य और करनामों को रखें। अंतिम चरण में महाराजगंज, गोरखपुर, कुशीनगर, देवरिया, सलेमपुर, बलिया, घोसी, गाजीपुर, वाराणसी, चंदौली, मिर्जापुर, रावटसगंज यह सभी सीट्स है इन सब पर इलेक्शन प्रारंभ हो चुका है। कहा कि मौसम की विपरित परिस्थितियों के बावजूद मतदाताओं ने जो उत्साह दिखाया है। मैं सबसे पहले उनसभी मतदाताओं की प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने लोकतंत्र के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते हुए भीषण गर्मी में, जब टेमप्रेचर 50 डिग्री के आसपास है जो संभवत: कई वर्षों के बाद और कई दशकों के बाद इस प्रकार की स्थिति में हम सबको देखने को मिल रही है। लेकिन इन सबके बावजूद भी जनता का उत्साह कम नहीं है बल्कि और मजबूती के साथ बढा है। देश को सुखद अनुभूति होगी कि मोदी एक बार फिर से प्रचंड बहुमत के साथ सरकार बनाएंगे। उत्तर प्रदेश इसमें अपनी भूमिका का निर्वाहन करेगा, पूरी मजबूती के साथ। 10 वर्ष में बदलते हुए भारत को सात वर्ष में डबल इंजन सरकर के द्वारा एक नए उत्तर प्रदेश का दर्शन कराया है। जिसमें सुरक्षा और विरासत के साथ-साथ विकास के एक नए युग में उत्तर प्रदेश ने प्रवेश किया है। चार जून को भाजपा फरि से सरकार बनाएगी। उन्होंने कहा कि प्रात: काल मौसम बहुत सुहावना है। इस सुहावने मौसम का आनंद लेकर मैं मतदाताओं से अपील करूंगा। यह हमें अभी जाति मत और मजहब से ऊपर उठ करके अपने देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक आत्मनिर्भर और विकसित भारत की जिस संकल्पना को मोदी जी ने आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में देशवासियों को दिया है। उसको साकर करने का समय आ गया है। भारत आज जो देश की सबसे बड़ी दुनिया की सबसे बड़ी उभरती हुई अर्थव्यवस्था है। यह आगामी तीन वर्ष में दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था। 2047 तक भारत को दुनिया की विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा करके। हर एक आदमी के जीवन में खुशहाली लाने के लिए कार्य किया जा सके। जनता जनार्दन का आशीर्वाद आज भारतीय जनता पार्टी को प्राप्त हो रहा है। हमें पुरा विश्वास है कि चार जून को फिर एक बार मोदी सरकर प्रचंड बहुमत के साथ आत्म निर्भर विकसित भारत की संकल्पना को साकर करने का कार्य करें।









मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भव्य रोड शो की झलकियां








प्रकृति के साथ छेड़छाड़ विनाश को दावत तो नहीं

अगर यह सिलसिला पेड़ काटने वाला इसी तरह चलता रहा तो एक दिन हमें ऑक्सीजन का टैंक और पानी का टैंक के लाइन के लिए तैयार रहें। एक कहावत है। ''एक वृक्ष 10 पुत्र समान''।

गोरखपुर (जीकेबी)। जनपद गोरखपुर के दक्षिणांचल में जोरो से चल रहे राम जानकी मार्ग का चौड़ीकरण का कार्य जो चिल्लूपार के मानव जीवन व जीव जंतुओं के पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ मानव जीवन का आने वाला समय बहुत ही विनाशकारी होने वाला है। लेकिन यहां जिम्मेदारों का कोई पता नहीं है। और बहुत से ऐसे समाजसेवी पड़े हैं यहां पर जो पर्यावरण दिवस के दिन एक पेड़ लगाकर सेल्फी लेकर सोशल मीडिया पर अपने आप को पर्यावरण प्रेमी बताते हुए समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाते हैं। लेकिन अब उन्हीं के सामने लगभग 50 वर्ष पुराने फलदार व विशालकाय पेड़ जो की राम जानकी मार्ग पर लगे थे वह पेड़ इस समाज के ठेकेदारों द्वारा सारा पेड़ कटवा या जा रहा है। पहले के समय में जब यातायात के इतने साध न नहीं थे तब लोग साइकिल से या बैलगाड़ी से एक लंबी दूरी तय करते थे और पूरे रास्ते में पेड़ के छांव और पेड़ों पर लगे फल खाकर यात्रा होता था। उसे समय पर्यावरण बिल्कुल स्वच्छ हुआ करता था। मानव जीवन में पेड़ पौधे का होना कितना महत्वपूर्ण है यह आप लोग भली-भांति जानते हैं। अगर यह सिलसिला पेड़ काटने वाला इसी तरह चलता रहा तो एक दिन हमें ऑक्सीजन का टैंक और पानी का टैंक के लाइन के लिए तैयार रहें। एक कहावत है। ''एक वृक्ष 10 पुत्र समान''। अरे भाई कहां गए इस समाज के रक्षक जो अपने काली कमाई के कारण आम जनता का जीना दुश्वार कर दिए हैं। क्या करेंगे हम ऐसी सुविधा को जो हमारे व हमारे आने वाले भविष्य को पहले ही मार दे। ये रामराज में पर्यावरण को ही नष्ट कर दिया जा रहा है। यह बात समझ में नहीं आ रही है। यह रामराज नहीं बल्कि रावणराज बन रहा है। यह जो मुखिया बने हैं यह अपने थोड़े से लाभ के लिए पूरे मानव जाति वह जीव जंतुओं को मौत के घाट उतार रहे हैं और दिखावा के लिए यह जो पेड़ लगा रहे हैं। क्या वे फलदार पेड़ हैं ? अभी तक जितना पेड़ काटे गए होंगे कम से कम 50 साल पुराने पेड़ रहे होंगे। अगर ये रास्ता बनाना ही था तो यह खाली जमीन को लेकर के बनाते तो हमारी यातायात सुविधा भी बढ़ जाती और हमारा पर्यावरण भी सही रहता।

अगर यह जनता अपने पर्यावरण की र क्षा नहीं करेगी तो आने वाले समय में पछताने के लिए तैयार हो जाइए। हम किसी पार्टी का विरोध करने के लिए नहीं कह रहे हैं हम अपने जीवन और पर्यावरण को सही करने के लिए आवाज उठाने के लिए कह रहे हैं। अगर हम आज चुप रहेंगे अपने पर्यावरण को लेकर के तो हम लोग एक गुलामी की जिंदगी जी रहे हैं। और जो यह ठेकेदार महोदय हैं इतने पेड़ काट रहे हैं यह सब लकड़ियां जा कहां रही है इसका कोई जवाब नहीं है। पर्यावरण के बिना जीवन यापन कर पाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है आने वाले समय में पानी की कमी हो जाएगी सूखा पड़ने लगेगा वातावरण स्वच्छ नहीं रहेगा सांस का रोग पैदा होगा जीव जंतुओं के साथ हम लोग खिलवाड़ कर रहे हैं। कृपया आप लोगों से मेरा निवेदन है सोच बदलिए राष्ट्र बदलिए लिए हम लोग एक साथ मिलकर के एक कदम अपने पर्यावरण की तरफ आवाज उठाते हैं।

गुटखा पर प्रतिबंध

तेलंगाना ने तंबाकू और निकोटीन यूक्त गुटखा व पान मसाला पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का जो फैसला किया है, वह सुखद है। ऐसे गुटखों या पान मसालों के निर्माण भंडारण, वितरण, परिवहन और बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लग गया है। हालांकि, अभी यह पाबंदी एक वर्ष के लिए है, शायद आगे इसकी समीक्षा होगी और उसके बाद राज्य सरकार स्थायी प्रतिबंध का फैसला करेगी। ताजा फैसले के मुताबिक, तेलंगाना में जो कंपनियां गुटखों या पान मसालों का उत्पादन करती हैं, वे एक साल किसी अन्य उत्पाद के निम्माण का काम करेंगी। ध्यान रहे, गुटखा लॉबी देश भर में बहुत मजबूत है और इससे सरकारों व उनमें शामिल लोगों को गलत ढंग से भारी कमाई होती है, इसलिए समय- समय पर ऐसे उत्पादों पर लगने वाले प्रतिबंध धरातल पर ज्यादा टिकते नहीं हैं। तेलंगाना में ही गुटखा निर्माण के पूरे ढांचे को उखाड़ फेंकना चाहिए था, पर ऐसा होना अभी दूर की कौड़ी है। भारत में गुटखा सहित धुआं रहित तंबाकू का उपयोग एक खतरनाक कुचलन है, जिससे गंभीर किस्म की बीमारियां होती हैं। विशेष रूप से गुटखा से कैंसर का खतरा होता है और इसी वजह से साल 2002 से ही गुटखा पर नियंत्रण के प्रयास चलते रहे हैं। साल 2012 से भारतीय राज्यों द्वारा प्रतिबंधित होने के बावजूद गुटखा व्यापक रूप से उपयोग में है। सबसे पहला राज्य मध्य प्रदेश है, जिसने गुटखा पर प्रतिबंध लगाया था, पर क्यां वहां सफलता मिली ? अनेक कंपनियों ने चालाकी बरती है, बिना तंबाकू वाला पान मसाला बिकता है और उसके साथ में तंबाकू का एक पैकेट अलग से मुफ्त दिया जाता है। प्रतिबंध लगने के बावजूद व्यापारियों ने बचने के रास्ते निकाल लिए हैं। बिहार, गुजरात जैसे राज्य, जहां कहने को तो शराब प्रतिबंधित है, पर क्या वहां शराब का मिलना बंद हो गया है ? ठीक इसी तरह से गुटखा के साथ हुआ है। लगातार चेतावनियों व विज्ञापनों के बावजूद गुटखा या तंबाकू का सेवन घट नहीं रहा है। इस दुव्यसन के आदी लोग सुध रने को तैयार नहीं हैं। ऐसे में, तेलंगाना में लगा प्रतिबंध कितना कारगर होगा, यह देखने वाली बात है। दरअसल, किसी भी प्रतिबंध का तभी लाभ है, जब सभी मिलकर प्रतिबंध की पालना करें।

तुलंगाना अगर अपनी सीमा में प्रतिबंध को कड़ाई से लागू करे, तोउसके पड़ोसी राज्यों तमिलनाड़, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र को भी सहयोग के लिए खड़ा होना पड़ेगा। देखा गया है कि किसी एक राज्य की भलमनसाहत को पड़ोसी राज्य प्राय: साकार नहीं होने देते। गुटखों और पान मसालों से जुड़ी समस्याओं को अभी भी हम गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। भारत में जनसंख्या-आधारित कैंसर रजिस्टर में पाया गया कि 55 प्रतिशत कैंसर तंबाकू के उपयोग से संबंधित थे। विगत वर्षों में तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल दिया गया, पर अच्छे परिणामों का अभी इंतजार है। लगे हाथ तंबाकू के दुष्परिणामों पर एक बार गौर कर लीजिए। भारत तंबाकू उत्पादों का दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा-उत्पादक और निर्यातिक है। भारत में लगभग 21.4 प्रतिशत वयस्क धुआं रहित तंबाकू का उपयोग करते हैं, जबकि 10.7 प्रतिशत वयस्क धुओं वाले तंबाकू उत्पादों का सेवन करते हैं। भारत में तंबाक छोड़ने की दर सबसे कम है, यहां सिर्फ 20 प्रतिशत पुरुष तंबाकू के दुव्व्यसन को छोड़ पाते हैं। वास्तव में, लोगों की नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करने की जरूरत है। साथ हीं ऐसे त्यादों पर लगे प्रतिबंधों को जमीन पर उतारने की जरूरत है।

जातीय संघर्ष : राष्ट्र के विकास का दहकता इस्पाती दस्तावेज



जन्म और मरण के बीच जगत में जो कुछ भी सत्य है वही भौतिक जीवन है। जीवन को जीने के अपने स्वत: परिचालित कुछ नियम है जो हमारे पूर्व जन्म और इस जीवन के कर्मो द्वारा संचालित है। पूर्व जन्म के कर्मों के परिणाम को टाल नहीं सकते किन्तु इस जीवन के कर्म पर हमारा पूर्ण अधिकार है। इस बात को हर कोई जानता है किन्तु मनुष्य अपनी जीवन सुविधा के लिए आदिकाल से अब तक स्वनिर्मित एक व्यवस्था का पालन भी करता आ रहा है और कालान. क्रमिक संशोधन भी। 'संघर्ष तो प्रकृति का स्वर्णिम अंकुर है जिससे सृष्टि उत्पन्न हुई तथा यह प्रकृति का प्रारम्भिक मौलिक गुण भी है। यहीं गुण व्यक्तिगत भी है और सार्वभौमिक भी है। समान रूप से हर स्तर पर इसके व्यापक प्रभाव परिलक्षित होते है। वर्गहीन, संघर्षहीन,जातीय संघर्षहीन समाज की कल्पना दार्शनिकों, विचारकों ने की है। यह एक अच्छा आदर्श भी है। किन्तु मैं मानता हूँ कि संघर्षहीन समाज नहीं होना चाहिए, न हो सकता और न कभी होगा।

संघर्षहीन,वर्गसंघर्षहीन समाज का कोई औचित्य नहीं है। जो देश- समाज इस संघर्ष से वंचित है वह कदापि जीवंत नहीं हो सकता। वह राष्ट्र संवेदनहीन और पिछड़ा है। मेरा अभिप्राय ये नहीं है कि समाज जातिगत रूढ़ बंधन में बंधा रहे। ये जातिबंधन किसी समय कबीलों की पहचान रही है। और उस समय ये जाति आधारित समाज की पहचान का आविष्कार एक दहकता इस्पाती जीवंत दस्तावेज था। सांस्कृतिक विकास की की अमिट गाथा बन गई। वृहदाकार पाकर ये आविष्कार कठोर हो गया और मानवीय जीवन के इतिहास का कलंक बन गया। जातिगत धारणा जब रूढ़ हो गई तब पहचान के लिए उस समय नया आविष्कार हुआ। अब जाति से ऊपर वर्ग हो गया। जातियाँ वर्ग में समाहित हो गई। ये विभाजन की सबसे पहली शुरूआत थी। काम के आधार पर बनाये गये वर्ग जन्म के आधार पर मान लिए गए तब समाजवादी विचारकों का जन्म नहीं हुआ था। यह वर्गीय निर्धारण का आधार मनुष्य को बेड़ियों में जकड़ता दुर्दशा की ओर ले गया। तब स्वच्छ सामाजिक संघर्ष उत्पन्न हुआ। उससे पहले उत्पन्न सामाजिक संघर्ष सिर्फ व्यक्ति को अपने और कबीले के अस्तित्व के लिए लड़ना सीखा रहा था। मानवीय संवेदनशीलता ने व्यक्ति को समाज के लिए लड़ना सिखाया। मैं कार्ल मार्क्स के विचारों से सहमत होकर भी मतैक्य नहीं रखता। मार्क्सवादी विचारों से संघर्ष करके क्रांति कर लाया परिवर्तन अराजकता,गृहयुद्ध और तानाशाही प्रवृत्ति को जन्म देता है। किंतु संघर्ष की शिक्षा देकर जातिगत रूढ़ बंधन तोड़कर समाज को विकसित करता है और लोकतंत्र का मार्ग प्रशस्त कर उसे बनाये भी रखता है। मैं जिस संघर्ष की पैरवी कर रहा हूँ वो इस प्रकार वर्णित है



ख्र प्राचीन समय में जब मनुष्य जब आदिम अवस्था में था तब वे सब एक समान थे उनके समूह में जो कुशल व सक्षम था उसका नेतृत्व उन्होंने स्वीकार किया। यह परम्परा चल पड़ी। जनसंख्या बढ़ी और कबीलों का आपसी सम्पर्क बढ़ा तब उनको पह. चान की आवश्यकता पड़ी तब किसी सामाजिक श्रृंखला की कड़ी की शुरुआत हुई जिनसे उनके कबीलों की पहचान बनी। कबीलें विस्तृत हुए और आपस में संयुक्त हुए तब यह पहचान किसी काम की नहीं रहीं। पहचान संकट देखकर जाति जैसी कोई नई धारणा का जन्म हुआ। जिसमें बहुत से कबीलें के लोग मिलकर रहने लगे अपनी पहचान भी बनाये रखी। यहीं से सभ्य समाज की तथा समाजवाद की नींव पड़ी। इसी से विकसित होकर यह सभ्यता आज के युग प्रविष्ट हुई। हम जातीय सामाजिक जीवन संघर्ष पर विचार करे तो परिणाम हमारे सामने आयेंगे। मेरे अनुसार ये निष्कर्ष ऐसे है-जाति के बाद वर्ग उत्पन्न हुआ। वर्ग कर्म(जीवनवृत्ति) के आधार पर बना बाद में जन्म आधारित हुआ तो सामाजिक दुर्दशा होने से वर्ग की जातियाँ संघर्ष करने लगी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र इन चारों में स्वयं में तथा आपस में संघर्ष हुआ। परिवार स्वरूप वर्गीय व्यवस्था बिखर गई। वंशीय,कुलीय परम्परा शासन में आई। ब्राह्मण वर्ग में आन्तरिक बदलाव आया पर बिखरा नहीं। जब भारत में केन्द्रीय शक्ति नहीं रहीं और विदेशी मुस्लिम आक्रांताओं आक्रमण किया और शासन स्थापित कर रहीं बस गये तब जातीय संघर्ष के साथ साम्प्रदायिक संघर्ष भी शुरू हो गया। जातीय सर्वोच्चता को धक्का लगा। जब इनमें सामंजस्य होने लगा तब अंग्रेज आये और नये जातीय संघर्ष, साम्प्रदायिक,सांस्कृतिक, धार्मिक संघर्ष की शुरुआत हुई। मुसलमानों के आने से धार्मिक संघर्ष भी हुआ। परन्तु जातीय जीवन इतना प्रभावित नहीं हुआ। अंग्रेजी व्यवस्था में जातीय समीकरण मिट्टी में मिले और नये जातीय बंधन जातीय उत्थान के साथ शुरू हुए। जातीय उत्थान के लिए संगठन बने। इसी समय का अवसर लाभ लेकर लोग पढ़ने लगे, जागरूक हुए। नई सामाजिक चेतना फैली। व्यक्ति को जाति के निर्रथक बंधन समझ में आने लगे किन्तु हजारों वर्षों से चली आ रही परम्परा को मिटना इतना आसान नहीं। लोग जाति के बंधन को स्वीकार कर जातीय कल्याण की भावना जुड़ गये। इसी समय आरक्षण की व्यवस्था की शुरूआत हुई। आज की आरक्षण व्यवस्था पुरातन वर्ग विभाजन व्यवस्था के समान है। सामान्य वर्ग,अन्य पिछड़ा वर्ग,अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति आदि ये ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य,शूद्र वर्ग का ही प्रछन्न रूप है। जो जातियाँ प्राचीन समय में पिछड़ी समझी जाती थी वो संघर्ष करके प्रगतिशील हो गई, जो प्रगतिशील समझी जाती थी उनमें ठहराव आया जीवन में विकार आया और निम्न जीवन दशा की और अग्रसर हुई परिणाम स्वरुप वो जाति पिछड़ गई। आज जो जाति पिछड़ी समझी जाती है। कुछ दशक बाद वो स्वर्ण जाति होगी क्योंकि वर्तमान आरक्षण की व्यवस्था ने इनके जातीय संघर्ष को वज्रास्त्र दे दिया। इन पिछड़ी जातियों के जीवन संघर्ष से जीवन स्तर में सुधार है, उच्च जाति के समान इनका जीवन बन गया। नौकरी लगने से इनकी जातीय संस्कृति, आचार-विचार,जीवन आदर्श, सामूहिक भागीदारी, शासकीय व राजनीतिक भागीदारी ने इस संघर्ष को सकारात्मक दिशा दी है।

आज के जातीय बंधन और जातीय संघर्ष कुछ दशक बाद भारतीय जातीय व्यवस्था में स्वर्णिम इतिहास लिखेंगे। पिछड़ी जातियाँ स्वर्णिम जाति होगी। और स्वर्णिम जातियाँ टूटेगी उनमें बिखराव होगा। इस बिखराव की जिम्मेदार स्थिति में शराब आदि नशीले पदार्थ महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे। जातीय व्युत्क्रम होता रहेगा, यह चक्र नये स्वरूप में होगा। यह प्रक्रिया नित्य चलेगी। नये वर्ग,जाति उत्पन्न होगी, विकास के चक्र में ढलकर कई जाति पिछड़ी होगी तो कई प्रगतिशील। प्रगतिशील जातियाँ पिछड़ेगी और पिछड़ी जातियाँ प्रगतिशील होगी। बिना इस जातीय संघर्ष के समाज का विकास नहीं होगा। व्यक्ति और समाज गर्त में चले जायेंगे। जातीय संघर्ष राष्ट्र विकास में बाधक तब बनता है जब वो खूनी संघर्ष में तब्दील हो हो जाये। हमारे यहाँ जातीय संघर्ष मानवीय संवेदना से सिक्त है। हमारा जातीय संघर्ष कभी राष्ट्र के विकास में कभी बाधक नहीं होगा। हमारा जातीय संघर्ष व्यक्ति के कर्म से बंधा है न कि हिंसा से। व्यक्तिगत उत्थान राष्ट्र विकास की कड़ी है।

कम लागत, अधिक मुनाफा अर्जित करने की मनोवृत्ति

गुजरात के राजकोट के इस भीषण अग्नि-कांड ने समूचे देश को झकझोर दिया है जो परिवार छुट्टी मनाने के लिए अपने मासूम बच्चों के साथ हंसी खुशी कुछ समय मस्ती करने के लिए इस गेम जोन में गए थे और हादसे का शिकार बन गए उनका क्या कुसूर था? यह अत्यन्त हृदयविदारक एवं वीभत्स, घटना देश के लिए कोई नई नहीं है इस से पहले भी उपहार सिनेमा से लेकर डबबाली तक मानसिक रोगियों के अस्पताल से लेकर नवजात शिशुओं की नर्सरी तक आग में हर साल दर्जनों जान जाती रही हैं। इस बेहद त्रासद हादसे ने भी ऐसी कई घटनाओं की कड़वी यादों को ताजा कर दिया है। इस अग्नि-कांड में हताहतों में अधिकतर बच्चे और उनके अभिभावक शामिल है। कनाडा से वतन आए एक नवदंपति की भी इस हादसे में जान चली गई है। यह दुर्घटना जब घटित हुई, उस समय इस गेम-जोन में टी. आर.पी. के जरिये मनोरंजक खेलों का आयोजन किया गया था। जानकारा के अनुसार इस ढांचा कुछ इस प्रकार से है, कि नीचे से ऊपर जाने और फिर ऊपर से नीचे आने का सीढ़ी मार्ग इतना संकरा था कि लोगों को बच निकलने का अवसर ही नहीं मिला। इसके अतिरिक्त इस व्यवसायिक स्थिल में आपात बचाव मार्ग था ही नहीं और निकासी गेट संकरे थे वहीं सुरक्षा उपकरण इतने कम थे, कि वे आग बुझाने की अपेक्षा व्यवधान का कारण बनते रहे। यह भी, कि इस व्यवसायिक केन्द्र के नए इर्द-गिर्द टायरों का कबाड़ और डीजल भी हजारों लीटर की मात्रा में पड़ा था जिससे आग बड़ी तेजी से नीचे से ऊपर की तीन मंजिह्लों की ओर फैल गई। आग का कारण अस्थायी रूप में बनाये गये खेल कमरों के निर्माण हेतु किये जा रहे वैल्डिंग कार्यों के दौरान हुए विस्फोट को बताया गया है। इस अग्निकांड के पीछे एक कारण यह भी बताया जा रहा है कि स्कूलों एवं अन्य शिक्षण संस्थानों में छट्टी होने और आयोजकों द्वारा प्रवेश शुल्क को काफी सीमा तक कम कर देने के कारण भीड़ अपेक्षा से अधिक हो गई थी जिसे नियंत्रित कर पाने की अतिरिक्त व्यवस्था नहीं की गई थी।

सम्भवत: इसी कारण कुछ नये कमरे बनाने हेतु वैल्डिंग कार्य किये जा रहे थे। अत्यधिक गर्मी के कारण वैल्डिंग से उपजी कोई चिंगारी किसी गैस सिलेण्डर में गिरने से संभवत: एकाएक भीषण विस्फोट हुआ, और मनोरंजन पिकनिक मस्ती के लिए वहां पहुंचे सैंकडों लो आग की लपटों के बीच घिर गये। इस खेल जोन में अधिकाधिक कमाई करने के लिए इसमें लकड़ी के पार्टिशन कर कमरे बनाये गये

थे। इस कारण आग तेजी से भड़की । घायलों में से कुछ की दशा गम्भीर है जिससे मृतकों की संख्या और बढ़ सकती है। आग से जले अनेक शवों के अंग-भंग हो चुके थे उनकी शिनाख्त तक नहीं हो पाई रही है सरकार ने डीएनए के जरिए मृतकों की शिनाख्त की कवायद शुरू की है।

उत्तर भारत में आग बरसाती गर्मी के बीच आग की घटनाएं भी लगातार बढ़ रही हैं। एक ओर तापमान 45 से 50 डिग्री की नौतपा वाली गर्मी के इस मौसम में आग लगने की घटनाएं भी काफी बढ़ गई हैं। मात्र दो दिन में गुजरात के राजकोट और दिल्ली के विवेक विहार के एक बच्चा केअर हास्पिटल में आग ने 40 से अधिक मासूमों की जान ले ली। सबसे दर्दनाक घटना गुजरात के राजकोट में हुई, जहां एक मॉल के गेमिंग जोन में शनिवार को भीषण आग लगने से 33 लोगों की मौत हो गई। मरने वालों में ज्यादातर बच्चे हैं। हालांकि पुलिस ने गेम जोन के मालिक और मैनेजर समेत दस लोगों को राउंडअप किया है। कहा जा रहा है कि इलेकट्रिक कारणों से गेम जोन में आग लगी थी। हैरानी है उक्त गेम जोन फायर बिना एनओसी के चल रहा था और इसे निगम के मनोरंजन विभाग से भी कोई मंजूरी नहीं मिली थी। इसके बाद भी ये लाक्षागृह कई सालों से बेधड़क कैसे चल रहा था, यह भी जांच का विषय है। सार्वजनिक स्थलों पर आग लगने जैसीऐसी कोई गम्भीर घटना गुजरात अथवा देश में पहली बार नहीं हुई, आपको याद दिला दें कि तक्षशिला में हुए एक अग्नकॉड में 22 बच्चों की मृत्यु हुई थी। उपहार सिनेमा में पचास से अधिक दर्शकों की मौत हो गई थी। दिल्ली के ही मुखर्जीनगर के कोचिंग सेंटर में आग में कई छात्र हताहत हुए कई होटलों होस्टल मैरिज होम में आग की घटनाएं कितने ही जीवन लील चुकी हैं वहीं हरियाणा के मंडी डबवाली के एक निजी स्कूल के कार्यक्रम में मैरिज होम के परिसर में 27 वर्ष पूर्व देश के एक सबसे बड़े अग्निकांड में 442 लोग जीवित जल गये थे जिनमें से 258 स्कूली बच्चे थे। एक स्कूल कार्यक्रम हेतु इस काम्पलैक्स में भव्य मिलन समारोह का आयोजन किया गया था। अभी बीते वर्षों में कई अस्पतालों के नर्सरी यूनिट में आग की घटनाएं लगातार सामने आती रही हैं इसी कड़ी में 25 मई को दिल्ली के विवेक विहार इलाके में स्थित एक बेबी. केयर हॉस्पिटल में आग लग गई। लोगों का कहना है कि मारत के प्राउंड फ्लोर में कई ऑक्सीजन सिलेंडर थे, जिसमें च्लास्ट हुआ। देखते ही देखते पूरी बिल्डिंग आग की लपटों से घिर गई फायर विभाग की टीम ने लोगों के साथ मिलकर 12 बच्चों को रेस्क्यू किया। लेकिन इलाज के दौरान 7 बच्चों की मौत हो गई और 5 बच्चे मौत से जुझ रहे हैं ।

सवाल उठता है कि देश भर में होने वाले इन हादसों से राज्य सरकारें क्या सबक लेती है? क्या देश के एक राज्य में ऐसा कोई हादसा होता है तो दसरे राज्यों की सरकारों को इस तरह के हादसे उनके राज्य में न ही इस के लिए सबक नहीं लेना चाहिए? हर बड़े हादसे के बाद आकस्मिक स्थिति में निकासी के लिए आपात कालीन द्वार न होने निकासी गेट संकरे व छोटे होने नक्शे पास बिना निर्माण क्षमता से अधिक लोगों का प्रवेश अग्निशमन के साधनों का अपर्याप्त होना आयोजन की अनुमति न लेना आदि ऐसे कारण है जो हर हादसे की पटकथा तैयार करते हैं। फिर राज्य सरकार उनके अधीनस्थ जिला प्रशासन अपन क्षेत्र के आयोजन अथवा सार्वजनिक स्थानों की जांच-पड़ताल व समय समय पर समीक्षा क्यों नहीं करते हैं? कम लागत में अधिक मुनाफा अर्जित करने की मनोवृत्ति अक्सर कितने भीषण कांड का कारण बन जाती हैं, इसका प्रमाण गुजरात और डबवाली की घटना से चल जाता है यह तथ्य भी किसी से छिपा नहीं है कि हमारे प्रशासनिक तंत्र की जड़ो तक भ्रष्टाचार की दीमक लगी है सही और नियम के अनुसार निर्माण की स्वीकृति के लिए भी रिश्वत जरूरी है ऐसी स्थिति में लोगों ने यह मान लिया है कि जब वैध काम के लिए भी सरकारी मशीनरी को रिश्वत देनी पड़ती है तो क्यों न कुछ नियमों को ताक पर रखकर रिश्वत देकर परमिशन जारी करा ली जाए? सरकारी प्रशासनिक मशीनरी की भ्रष्टाचार में गहरे तक लोलुपता कर्तव्य निर्वहन में कोताही और आम जन की जान माल की सुरक्षा की उपेक्षा कर जेब भरने का भाव हर हादसे के मल में जिम्मेदार हैं।

तपती गर्मी में 'मटके' का जल बहुत उपयोगी?

आधुनिक चकाचौंध में टेक्नोलॉजी से लबरेज युग में देसी मटको का क्रेज आज भी बरकरार है। दूषित पानी के इस्तेताल से बढ़ते मरीजों को जबसे चिकित्सकों ने मटके का पानी पीने की सलाह दी है, लोगों का रूझान अनायास घड़ों की ओर दौड़ा है। मिट्टी का ये आइटम न सिर्फ मन को भाता है, बल्कि चिलचिलाती गर्मी में सूखे गलों को भी तरबतर कर देता है। घडे का पानी पीने में तराबट आती है। गले में अलौकिक ठंड़क पड़ती है। क्योंकि घड़े के पानी में मिट्टी की सौंधी-सौंधी सुगंध जो आती है। घडे का पानी जमीन से तुरंत निकले ताजे पानी जैसा अहसास करवाता है। गर्मियों में जब घड़ों की डिमांड बढ़ती है तो कुम्हारों का व्यवसाय भी खूब फलने-फूलने लगता है। इस सीजन में उनकी आमदनी में अचानक से उछाल आता है। क्योंकि लोग बाजारों से लगातार मटके खरीदते हैं। इस समय मटको की कीमत दो सौ से लेकर हजार रुपए तक पहुंची हुई है। मटकों बढ़ती डिमांड को देखकर अब ऑनलाइन सेल्स कंपनियां भी कूद पड़ी हैं। वो कुम्हारों को ऑर्डर देकर मटके बनवाते हैं, फिर उच्च दामों में ऑनलाइन बेचते हैं। मटके का पानी ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करता है, शरीर का बैड कोलेस्ट्रॉल कम करता है और ब्लड सर्कुलेशन नियंत्रित रखने में मदद करता है। मई-जून में गर्मी का सितम जब नॉनस्टॉप होता है तो लोगों को देसी मटके की याद अचानक से आनी शुरू हो जाती है। आधुनिक युग में शायद ही कोई घ ार ऐसा हो, जिनके यहां फ्रिज न हो? लेकिन बावजूद इसके देसी मटको का क्रेज अपने जगह बरकरार है। एक प्रचलित कहावत है कि 'सोने की खोज में, हीरे को भूल गए। कुछ ऐसा ही हुआ, जब जमाने ने बदलाव के लिए करवट ली, तो जनमानस ने देसी परंपराओं के साथ प्राचीन धरोहर कही जाने वाली वस्तुओं से भी तौबा कर लिया। पर, वक्त का पहिया फिर बदला है। इसलिए लोग पुराने जमाने की ओर फिर से मुड़ने लगे हैं। मई आधी बीच चुकी है, पिछले सप्ताह से समूचे हिंदुस्तान में चिलचिलाती गर्मी ने कहर बरपा शुरू कर दिया है। फ्रिज का पानी आनंद नहीं दे रहा, इसलिए लोग मटको को पसंद कर रहे हैं। मटकों का पानी आज भी फ्रिज के मुकाबले ठंडा और स्वादिष्ट लगता है।

चंगे शरीर के लिए ताजा पानी लाभदायक होता है। इसलिए, देसी घड़े का पानी न सिर्फ स्वास्थ्य के लिए बल्कि हजामा दुरूस्त के लिए भी गुणकारी होता है। चिकित्सीय सर्वेक्षण बताते है कि सर्दियों के मुकाबले गर्मियों में मटके का ठंडा पानी शरीर के लिए बहुत उपयोगी होता है। क्योंकि मटके की दीवारें मिट्टी से सरंध्री होती हैं, जिससे पानी धीरे-धीरे रिसता है और बर्तन की सतह से वाष्पित होता है। इसका भीतरी वातावरण वाष्पीकरण ऊष्मा ठंड़क का उतार्जन करता है जिससे अंदर जमा पानी चंद मिनटों में ठंडा हो जाता है। दरअसल, वाष्पीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पानी की तरलता से गैसीय अवस्था में बदलती है। जब पानी वाष्पित होता है, तो यह अपने आसपास की गर्मी को अवशोषित कर लेता है। बढ़ाता तापमान मटके में मौजूद पानी को गर्मी से बचाता है। मटका मिट्टी से निर्मित होता है जिसमें सूक्ष्म छिद्र होते हैं, जो पानी को वाष्पित होने में मदद करते हैं। घडे की मिट्टी पानी को इन्सुलेटर करती है जिसके इस्तेमाल से शरीर हाइड्रेट रहता है और पाचन प्रक्रिया हमेशा दुरुस्त रहती है। बीते एक सप्ताह से गर्मी रिकॉर्ड तोड़ रही है। पहाड़ी क्षेत्रो में टेम्परेचर चालीस पार है, मैदानी क्षेत्रों में तो कहीं-कहीं फिफटी लगा चुका है। ऐसे में पेट की ठंड़क मटकों पर निर्भर हो गई है। प्रत्येक चौथा व्यक्ति मटका खरीद रहा है। दरअसल, मटका एक प्राकृतिक कटोरा है



जो मानव द्वारा निर्मित मात्र है जिसकी अंदरूनी दीवारें पानी को ठंडा बनाती हैं। मटके के धातु और मिट्टी के भीतर रखे गए पानी के संपर्क से पानी की ठंडक सूखने की प्रक्रिया धीरे-धीरे होती है जिसमें पानी लंबे वक्त तक ठंडा रहता है। शायद ये भी एक कुदरती प्रक्रिया ही है कि जितनी गर्मी बढ़ेगी, मटके का पानी भी उतना ही ठंडा होगा। फ्रिज और आरओ पानी की आदत इंसान को कई बीमारियों से घेर रही है। जबकि, घड़े का पानी अजंमी कई बीमारियों से लड़ने की ताकत रखता है। तभी तो घरों के बुजुर्ग अभी भी मिट्टी के बर्तनों का पानी पीने को कहते हैं। हालांकि, आधुनिक जमाने में बुजुर्गों के अनुभव कोई लेता कहां? मटके का पानी सिर्फ ठंडा-ठंडा, कूल-कूल ही नहीं करता, बल्कि कई बीमारियों से बचाव भी करता है। मटके की सबसे बड़ी खासियत को भी हमें जानना चाहिए। मटका आरओ द्वारा प्यूरीफायर किए पानी से मर चुके मिनरल्स को भी दोबारा जिंदा कर देता है। अगर आरओ से पानी निकालकर घड़े में सिर्फ पंद्रह मिनट तक रखा जाए, तो उसके मरे हुए मिनरल्स वापस पनप जाते हैं। क्योंकि मिट्टी के घड़े में कैल्शियम की मात्रा बहुतायत रूप में रहती है। शहरों में अक्सर लोग अब यही करने लगे हैं, पानी को पहले प्यूरीफायर कर लेते हैं, फिर उसे घडे में उलट देते हैं जिससे पानी दोबारा से पहले से हो जाता है। चिकित्सक शुरू से कहते आए हैं कि आरओ के पानी में मिनरल्स बिल्कुल भी नहीं बचते, मर जाते हैं। आरओ द्वारा प्यूरीफायर पानी से सारे मिनरल्स निकल जाते है, जिस कारण उसका टीडीएस लेवल बहुत कम हो जाता है जिसके सेवन से लोगों की पाचन प्रक्रिया दिनादिन प्रभावित हो रही है। तमाम अन्य बीमारियां भी लग रही हैं। चिकित्सकों की माने तो आरओ पानी में बैक्टीरियल इन्फे. क्शन और फंगल इन्फेक्शन की संभावना सबसे ज्यादा रहती हैं। इसके अलावा पेट से संबंधित अधिकांश बीमारी भी दूषित पानी के इस्तेमाल से पनपती हैं। आरओ पानी को पीने की कोई भी सलाह नहीं देता, विशेषकर बच्चों को? उनके लिए सबसे घातक होता है ये पानी? आरओ पानी का मतलब है टोटल डिसोल्वड सालिबिलिटी? मतलब उस पानी में साधारण पानी की अपेक्षाकृत कम खनिज लवणों का होना, जिसमें हानिकारक तत्व बेहताशा घुले होते हैं। पानी को दो-तीन मर्तबा छानने या फिल्टर करने का मतलब होता है पानी की आत्मा को अंदर खींचकर शरीर से अलग कर देना। यही कारण है कि चिकित्सक मरीजों को मटके का ही पानी पीने की सलाह देते हैं। लोग भी अब समझ गए हैं, इसलिए गर्मी शुरू होते ही मटको की खरीदारी करनी आरंभ कर देते हैं।

गाय-भैंसों को भी लग सकती है लू, गर्मियों में ऐसे करें पशुओं की देखभाल



बढ़ते पारे ने दुधारू पशुओं पर बहुत दबाव डाला है और यह सबसे बुरा तब होगा जब सापेक्ष आर्द्रता 90% से अधिक हो जाएगी। मौजूदा परिस्थितियों में दूध का उत्पादन कम फीड इनटेक और अतिरिक्त हीट लोड के कारण भी कम हुआ है। हरे चारे की मात्रा बढ़ानी चाहिए और लंबे चारे को खिलाने से पहले काटना चाहिए। यदि चराई का अभ्यास किया जाता है, तो जानवरों को सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक चराने से बचें। 20-30 मिनट के लिए बराबर मात्रा में पानी में भिगोने से पोषक तत्वों का उपयोग बढ़ जाएगा। गर्मियों के दौरान आहार खनिज और विटामिन पूरकता में वृद्धि की जानी चाहिए क्योंकि गर्मी के तनाव के प्रभाव में इसका उत्सर्जन बढ़ जाता है। गर्मी के तनाव की अवधि के दौरान आहार में सोडियम और पोटेशियम की आपूर्ति से दूध की उपज बढ़ जाती है। पशुओं के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए उचित कृमिनाशक और टीकाकरण कार्यक्रम का पालन किया जाना चाहिए।

देश के कई राज्यों में भीषण गर्मी का दौर शुरू हो चुका है, गर्मी का असर इंसान के साथ-साथ मवे. शियों के ऊपर भी दिखने लगा है। इस मौसम में पशुओं को लू लगने का खतरा बना रहता है साथ ही अधिक तापमान का असर दूध देने वाली मवेशियों पर होता है और उनके दूध देने की क्षमता कम हो जाती है। जिसका नुकसान किसानों को उठाना पड़ता है। ऐसे में पशुपालकों को इस समय पशुओं की उचित देखभाल करनी चाहिए। बढ़ते तापमान को देखते हुए पशुपालन एवं डेयरी विभाग द्वारा पशुओं को लू से बचाने के लिए एडवाइजरी भी जारी की जाने लगी है। पशुपालक को मौसम में होने वाले परिवर्तनो के अनुसार अपने पशुओं का प्रबंधन करना चाहिए जिससे उनके उत्पादन पर कोई विपरीत प्रभाव न पड़े। गर्मी के मौसम में पशुओं के बीमार होने की संभावना बढ़ जाती है। गर्म हवाओं एवं तापमान अधिक होने पर पशुओं को लू लगने का भी खतरा बना रहता है।

भारत में पशुपालन के तहत बडे स्तर पर दुधारु पशुओं को पाला जाता है। इनमें सबसे ज्यादा गाय, भैंस, बकरी और ऊंट की तादात शामिल है। जाहिर है कि पशुपालन बेहद जिम्मेदारी वाला काम है, जिसमें समय पर पशुओं की साफ-सफाई, चारा देना, पानी देना, दुहाना और घुमाना शामिल है। लेकिन गर्मियां आते ही तपती धूप में पशुओं को लू लगने के समस्या भी घेर लेती है। हालांकि पहले से ही सावधानियां बरत के बीमारियों को पनपने से रोका जा सकता है। लेकिन फिर भी परेशानी बढ़ जाये तो समय रहते इनकी पहचान करके पशुओं को बीमार होने से बचाया जा सकता है। हालांकि गर्मी के मौसम का दुष्प्रभाव सभी प्रजातियों के जानवरों में देखा जाता है, लेकिन गाय, भैंस और मुर्गे अधिक प्रभावित होते हैं। यह काले रंग, पसीने की ग्रंथियों की कम संख्या और भैंसों में विशेष हार्मोन के प्रभाव, और मुर्गी में पसीने की ग्रंथियों की अन. पस्थिति और शरीर के उच्च तापमान (107 ए) के कारण होता है। जाहिर है कि देश में तपती धूप में कभी-कभी पारा 45 डिग्री तक चला जाता है। ऊपर से गर्म हवाओं से पशुओं को पानी की कमी और हीट-स्ट्रोक हो सकता है। अगर समय से सावधानियां बरती जाये तो बीमरियों की संभावना कम हो जाती है। लेकिन फिर भी पशु गर्मी के चलते बीमार हो जाते हैं तो इन लक्षणों से पहचान कर सकते हैं- पशु को तेज बुखार और बेचैनी होना, ठीक से आहार न लेना, तेज बुखार में हाँफना, नाक और मुंह से लार का बहना, आंखों का लाल होना और आँसू बहना, तेज सांस लेना और लड़खड़ाकर के गिरना, सुस्ती और खाना-पानी बंद कर देना।

अत्यधिक गर्म आर्द्र या गर्म शुष्क मौसम के दौरान, पसीने और हांफने से गर्मी को दूर करने के लिए मवेशियों की थर्मोरेगुलेटरी क्षमता से समझौता किया जाता है और गर्मी का तनाव होता है। गंभीर गर्मी के तनाव से शरीर के तापमान में वृद्धि हो सकती है, नाड़ी की दर में वृद्धि हो सकती है, परिध ाय रक्त प्रवाह में वृद्धि हो सकती है, भोजन का सेवन कम हो सकता है और पानी का सेवन बढ़ सकता है। बढ़ते पारे ने दुधारू पशुओं पर बहुत दबाव डाला है और यह सबसे बुरा तब होगा जब सापेक्ष आर्द्रता 90% से अधिक हो जाएगी। मौजूदा परिस्थितियों में दूध का उत्पादन कम फीड इनटेक और अतिरिक्त हीट लोड के कारण भी कम हुआ है। हरे चारे की मात्रा बढ़ानी चाहिए और लंबे चारे को खिलाने से पहले काटना चाहिए। यदि चराई का अभ्यास किया जाता है, तो जानवरों को सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक चराने से बचें। 20-30 मिनट के लिए बराबर मात्रा में पानी में भिगोने से पोषक तत्वों का उपयोग बढ़ जाएगा। गर्मियों के दौरान आहार खनिज और विटामिन पूरकता में वृद्धि की जानी चाहिए क्योंकि गर्मी के तनाव के प्रभाव में इसका उत्सर्जन बढ़ जाता है।

गर्मी के तनाव की अवधि के दौरान आहार में सोडियम और पोटेशियम की आपूर्ति से दूध की उपज बढ़ जाती है। पशुओं के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए उचित कृमिनाशक और टीकाकरण कार्यक्रम का पालन किया जाना चाहिए। एक्टो-परजीवी, जिनका संक्रमण गर्मियों के दौरान बढ़ जाता है, को जानवरों के साथ-साथ शेड में, विशेष रूप से कोनों और दरारों में उपयुक्त एसारिसाइडल स्प्रे का उपयोग करके ठीक से नियंत्रित किया जाना चाहिए। गर्मी के मौसम में उचित देखभाल और प्रबंधन तकनीक से किसानों को स्वस्थ पशुओं को बनाए रखने, अधिक दूध उत्पादन और डेयरी फार्मिंग से निश्चित लाभ प्राप्त करने में मदद मिलेगी। गर्मी के महीनों के दौरान जानवरों की देखभाल उनके स्वास्थ्य, कल्याण और समग्र अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। तीव्र गर्मी और अत्यधिक मौसम की स्थिति जानवरों के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियां और जोखिम पैदा कर सकती है, लेकिन उचित देखभाल और ध्यान से इन्हें कम किया जा सकता है।

गर्मी के तनाव और निर्जलीकरण को रोकने के लिए पर्याप्त छाया, ताजा पानी और पर्याप्त वेंटिलेशन प्रदान करना आवश्यक है। रहने की जगह को नियमित रूप से संवारना और साफथ्रसुथरा रखना जानवरों को गर्मी से निपटने में मदद करता है और त्वचा के संक्रमण और परजीवियों के जोखिम को कम करता है। इसके अतिरिक्त, गर्म मौसम के दौरान व्यायाम दिनचर्या को समायोजित करना, भोजन कार्यक्रम, और गर्मी के थकावट या तापघात के संकेतों की निगरानी करना महत्वपूर्ण है। गर्मियों के दौरान विभिन्न जानवरों की प्रजातियों की विशिष्ट आवश्यकताओं के बारे में खुद को और दूसरों को शिक्षित करना जिम्मेदार पालतू स्वामित्व को बढ़ावा दे सकता है और अनावश्यक पीड़ा को रोक सकता है। इन उपायों को लागू करके, हम अपने पशु साथियों के लिए एक सुरक्षित और आरामदायक वातावरण बना सकते हैं, उनकी भलाई सुनिश्चित कर सकते हैं और मनुष्यों और जानवरों के बीच एक मजबूत बंधन को बढ़ावा दे सकते हैं। याद रखें, हमारे प्यारे, पंखदार, और स्केली दोस्त उनकी देखभाल और सुरक्षा के लिए हम पर भरोसा करते हैं, खासकर चुनौतीपूर्ण गर्मी के मौसम में।



डॉ. सत्यवान सौरभ,



लोकसभा चुनाव-2024



आत्महत्या के कारण उजड़ते परिवार

आए दिन हर जिले में आत्महत्या के मामले सामने आते हैं। हर आत्महत्या के पीछे कोई न कोई वजह होती हैलेकिन कई बार यह कारण इतना मामूली होता है कि कोई इस वजह से या इतना छोटी सी बात पर जीवन खत्म कर सकता है अनुमान लगाना भी मुश्किल होता है। उदाहरण के लिए सबसे ताजा मामला मथुरा यूपी का है। बिहार के मुजफ्फरपुर से लापता तीन किशोरियों ने उत्तर प्रदेश के मथरा में ट्रेन के आगे आकर एक साथ आत्महत्या कर ली। घटना 24 मई की है, तीनों शवों की परिजन ने पहचान कर ली है। मगर इस आत्महत्या केस की गुत्थी तीनों लड़कियों के हाथों में लगी ताजी मेहंदी और उनके गुम मोबाइल में उलझ गई है। इस गुत्थी को सुलझाने के लिए एसआईटी गठित की गई है ड्राइवर बोला, आपस में हाथ पकड़े तीनों आई ट्रेन के सामने जिस मालगाड़ी से तीनों छात्राओं ने कटकर आत्महत्या की है, उसके पायलट शिव कुमार का पुलिस ने बयान लिया है। वह घ टना का चश्मदीद गवाह भी है। शिव कुमार ने पुलिस को बताया है कि वह मथुरा-दिल्ली रूट पर ट्रेन ले जा रहा था तभी तीनों छात्राएं एक दूसरे का हाथ पकड़कर सामने आ गई। ट्रेन करीब 90 मीटर की दरी पर रही ने ब्रेक लगाए, लेकिन ट्रेन वहां नहीं रुक सकी। तीनों ट्रेन से कट गई। ट्रेन रुकी तो गार्ड ने उतरकर देखा। तीनों की मौत हो चुकी थी। एक अन्य वारदात में 11 मई को संगरूर में एक मां-बेटी ने अपने वैवाहिक जीवन की समस्याओं के कारण रेल के नीचे कट कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। 11 मई को ही लुधियाना के इस्लामगंज इलाके में अपनी पत्नी से झगड़े के बाद एक व्यक्ति ने अपनी छाती में चाकू घाप कर आत्महत्या कर ली। 14 मई को बठिंडा में कालेज के होस्टल में रहने वाली बी.ए. (द्वितीय वर्ष) की छात्रा ने एक युवक तथा उसकी मां द्वारा उस पर शादी के लिए दबाव डालने के कारण फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली 15 मई को महाराष्ट्र के जलगांव में क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर के आवास पर तैनात एक पुलिस कांस्टेबल ने अपने गृह नगर जामनेर में रात के समय अपने सिर पर गोली मार कर आत्महत्या कर ली 16 मई को होशियारपुर के मोहल्ला न्यू दीपनगर के एक युवक ने मानसिक परेशानी के कारण फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली होगी। इन दिनों देश में लोगों मैं आत्महत्या करने की कायरतापूर्ण दुप्रवृत्ति तेजी से बढ़ती जा रही है। एनसी. आर. बी. की ताजा रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2022 में देश में 1,70,924 मौतें लोगों द्वारा आत्महत्याओं के कारण हुई। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो की साल 2022 की रिपोर्ट में बताया गया कि पिछले साल देश में सुसाइड के कुल 1 लाख 71 हजार मामले रिकॉर्ड किए गए। यानी हर दिन 468 लोगों ने आत्महत्या की। एनसीआरबी की रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले साल महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा सुसाइड हुए। यहां 22,746 लोगों ने आत्महत्या की। तमिलनाडु में 19,834 और मध्य प्रदेश में 15,386 लोगों ने सुसाइड किया। आत्महत्या करने वालों में 11,290 लोग खेतिहर मजदूर या किसान थे। इनमें 5.207 किसान और 6. 083 खेतिहर मजदूर थे। इस हिसाब से हर दिन 30 मजदूरों या किसानों ने सुसाइड किया यह 2021 की तुलना में 3.7% ज्यादा है। 2021 में कृषि क्षेत्र से जुड़े 10, 881 लोगों की आत्महत्या से मौत हुई थी। इनमें 5.318 किसान और 5, 563 खेतिहर मजदूर थे। पुरुष किसानों की संख्या 4999 और महिलाओं की 208 थी महानगरों की बात करें तो दिल्ली में सबसे ज्यादा 3,367, बेगलुरु में 2,313, चेन्नई में 1 581 और मुंबई में 1,501 लोगों ने पिछले साल आत्महत्या की। दिल्ली में 2021 की तुलना में आत्महत्या के मामले 21% बढ़े हैं। देश में 2021 के मुकाबले यह आंकड़ा 4.29 बढ़ा है। 18 मई को तेल्गू टैलीविजन अधिनेता चंद्रकांत ने अपने फ्लैट में आत्महत्या कर ली। वह कुछ दिन पूर्व अपने साथी कलाकार पवित्रा जयराम की एक सड़क दर्घटना मैं मृत्यु के बाद से अवसाद से ग्रस्त थे। 20 मई को तपा मंडी में एक विवाहिता ने अपने पति के व्यवहार से तंग आकर बेटी सहित जोगा रल्ला नहरश में कूद कर आत्महत्या कर ली ।21 मई को मध्य प्रदेश में राजगढ़ जिले के खिलचीपुर से विधायक हजारी लाल दांगी के पोते विकास दांगी ने इंदौर में सल्फास निगल कर जान दे दी। पुलिस के अनुसार यह घटना प्रेम प्रसंग का परिणाम है। 23 मई को बिजनैस में घाटे से परेशान अनाज मंडी खन्ना के एक आढती ने गांव कौड़ी के निकट टेन के आगे कूद कर आत्महत्या कर ली। 23 मई को ही हरियाणा के जींद में अपने पति की मौत से परेशान महिला ने अपनी दोनों बेटियों को जहर देने के बाद स्वयं भी जहरीला पदार्थ खा लिया, जिससे महिला और उसकी एक बेटी की मौत हो गई ।

23 मई को ही तमिलनाडु में शिवाकाशी के निकट थिरुथांगल 18 मई को तेल्गू टैलीविजन अधिनेता चंद्रकांत ने अपने पलैट में आत्महत्या कर ली। वह कुछ दिन पूर्व अपने साथी कलाकार पवित्रा जयराम की एक सड़क दर्घटना मैं मृत्यु के बाद से अवसाद से ग्रस्त थे। 20 मई को तपा मंडी में एक विवाहिता ने अपने पति के व्यवहार से तंग आकर बेटी सहित जोगा रल्ला नहरश में कूद कर आत्महत्या कर ली ।

सोशल मीडिया पर वायरल होता

अजब-गजब फरमान!

गोरखपुर (जीकेबी)। उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनाव के अंतिम चरण का मतदान हो रहा है। इसी बीच चुनावी ड्यूटी से जुड़ा एक अजीबो-गरीब फरमान वायरल हो रहा है। इस पर लोग तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। दरअसल, गोरखपुर में एक आदेश के तहत एक सेक्टर मजिस्ट्रेट को सुबह 4 बजे जगाने के लिए 5 लेखपालों की ड्यूटी लगाई गई है। इसके लिए जारी किया गया आदेश वायरल हो रहा है। गोरखपुर में लोकसभा चुनाव-2024 से जुड़ा एक अजब-गजब आदेश वायरल हो रहा है। 323 गोरखपुर ग्रामीण विध नसभा के सहायक रिटर्निंग ऑफिसर के हस्ताक्षर से यह आदेश जारी हुआ है। यहां विधानसभा क्षेत्र में तैनात सेक्टर मजिस्ट्रेट को सुबह 4 बजे जगाने के लिए बकायदा 5 लेखपालों की ड्यूटी लगाई गई है। साथ ही इस आदेश को तत्काल प्रभाव से लागू भी किया गया है. अब इसे देखकर हर कोई हैरान है। सोशल मीडिया पर वायरल लेटर के मुताबिक यह 28 मई को जारी किया गया है। आदेश के मुताबिक लेखपाल विकास गुप्ता, रजत वर्मा, दिवाकर मद्धेशिया, रितेश पाल, राजीव बघेल की ड्यूटी गोरखपुर ग्रामीण विधानसभा में तैनात सेक्टर मजिस्ट्रेट को जगाने के लिए लगाई गई है। इस आदेश के साथ ही सेक्टर मजिस्ट्रेट की सूची भी संलग्न की गई है।

प्रशासनिक प्रतिक्रिया

मामले को लेकर डिप्टी डीओ विनीत सिंह का कहना है कि 4 बजे सेक्टर मजिस्ट्रेट को सचेत कर दीजिए। जिससे कि वे समय पर निकल जांए, लेकिन क्लर्क की मिस्टेक की वजह से ऐसा हुआ है। जानकारी के मुताबिक डीएम ने कहा था कि कंट्रोल रूम के चार लोगों की ड्यूटी सेक्टर मजिस्ट्रेट्स को सचेत करने के लिए लगा दो। उसमें बाबू ने आदेश में जगाने की बात लिख दी। यह बात रामगोपाल द्विवेदी गोरखपुर ने बताई है।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र एवं एक बड़ी आबादी वाला देश है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि सरकारी तंत्र की लापरवाही एवं भ्रष्टता से रह-रहकर हादसे होते रहें और उनमें बड़ी संख्या में लोग मरते रहें। दुर्भाग्य से अपने देश में यही हो रहा है।

भ्रष्टाचार : विकसित भारत की सबसे बड़ी बाधा

लोकसभा के सातवें चरण के चुनाव होने शेष रहे हैं, सबकी नजरें चुनाव परिणामों पर लगी है। ये चुनाव परिणाम ही तय करेंगे कि नये भारत, विकसित भारत एवं समृद्ध भारत की तस्वीर क्या करवट लेगी। भ्रष्टाचार एवं उससे उपजे हादसों ने चुनाव के दौरान ही ऐसे वीभत्स दृश्य उपस्थित किये, जो चुनावी मुद्दा न बनना एवं राजनेताओं के बीच इनकी चर्चा न होना, दुर्भाग्यपूर्ण तो है ही, लेकिन उससे ज्यादा चिन्ताजनक यह है कि हमारी राजनीति अभी भी विकसित भारत के सपने को आकार देने के लिये तैयार नहीं दिख रही है। पुणे पोर्शे कार एक्सीडेंट ने भ्रष्टाचार की इतने परतें खोली दी है कि उसमें न्यायालय, पुलिस, राजनेता, डाक्टर सभी अपना जमीर बेचते हुए दिखाई दिये हैं। इसी तरह राजकोट एवं दिल्ली की अग्निकांडों ने प्रशासन एवं व्यवसाय में पसरे भ्रष्टाचार की काली परतों को उजागर किया है। इस तरह अस्पताल हो चाहे होटल, गेम जोन या मॉल, सुरक्षा इंतजामों, प्रशासनिक जिम्मेदारी एवं ईमानदारी की खुलकर धज्जियां उड़ती रहेगी या पुणे की तरह अब बिकते रहेंगे तो विकसित भारत का सपना कैसे आकार लेगा?

छह सौ करोड़ी पिता ने अपने बेटे के अपराध पर पर्दा डालने एवं उसे बचाने के लिये किसको नहीं खरीदा। कैसे जनता की रक्षा होगी एवं उसे न्याय मिलेगा, जब सब बिकने के लिये तैयार बैठे हैं। बेबी केयर अस्पताल हो या राजकोट का गेम जोन का हादसा- किसी की जान की कीमत कागज के चंद टुकड़े कैसे हो सकती है? न्यायालय भी ऐसे मामलों में संज्ञान लेकर शुरुआत तो करता है, लेकिन यह शुरुआत अंजाम तक नहीं पहुंच पाती। हादसे की आंच ठंडी पड़ी नहीं कि मिलीभगत का खेल फिर शुरू हो जाता है। संबंधित अधिकारी भी आंख मूंदकर सो जाते हैं और फिर किसी हादसे के बाद ही उनकी कुंभकरणी नींद खुलती है। इन ज्वलंत एवं भ्रष्ट हालातों में कैसे भारत की तकदीर एवं तस्वीर बदलेगी? भ्रष्टाचार और घोटालों के इस घटाटोप मौसम में ऐसा कुछ भी कह पाना मुश्किल हो गया है, जो भारत या इसके लोगों की जिंदगी पर उजली रोशनी डालता हो। भारत अपनी दुश्वारियों में लस्त-पस्त उस मध्ययुगीन योद्धा की तरह दिखता है, जो चुनावी जंग के मैदान में आहें भर रहा है। कोई नहीं जानता, किसके दामन में कितने दाग हैं? कोई नहीं जिस पर यकीन किया जा सके, धरती का कोई कोना नहीं, जिसके नीचे दबा कोई घ ोटाला खुदाई का इंतजार न कर रहा हो। लेकिन यही चुनाव, हादसों एवं भ्रष्टता के मौके होते हैं, जब किसी देश के सच्चे चरित्र का पता चलता है। आगे-पीछे चुनावों के तहत तथाकथित नेता द्वारा हजारों जुमलों में किसी समाज व्यवस्था को बहलाया जा सकता है, लेकिन बुरे वक्त में नहीं। भारत के चरित्र को परखने का सही समय चुनाव है या ऐसे वीभत्स हादसें एवं भ्रष्टता की अंधी गलियां। भारत दुनिया का गुरु बनने एवं तीसरी अर्थ-व्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है, दुनिया भारत के आध्यात्मिक अनुभवों से मोहित है और यह एक पक्की बात है कि धर्म को लेकर जैसा काम भारत में हुआ, वैसा कहीं नहीं हुआ और पिछले दशक में उसे और जीवंतता मिली। लेकिन यह एकांगी मह. नता है, क्योंकि दुनिया में तरक्की के पैमाने भौतिक हैं और उस मामले में भारत की ताकत सदियों पहले खत्म हो गई थी, अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अध्यात्म के साथ उसी भौतिक ताकत को बढ़ा रहे हैं। जहां तक ईमानदारी, निष्ठा और सत्य जैसे मूल्यों का सवाल है, वे कितने हमारी जिंदगी में हैं इसका पता करप्शन के आंकड़ों एवं बार-बार होने वाले हादसों से लग जाता है।

हाल के बरसों में जानकारों और मीडिया ने यह बात फैला दी है कि भारतीय इसलिए दुनिया में अनूठे हैं कि वे कुछ भी कर सकते हैं। लेकिन हमारे देश में ऐसे राजनेता हैं जो दुश्मन देशों की तरफदारी करते हुए लोगों के दिलों को जीतने की जुगाड़ में लगे हैं। ऐसे भी राजनेता है जो भ्रष्टाचार मुक्ति का नारा देते हुए कहते है कि आप हमें वोट देंगे तो हमारा जेल जाना रूक सकता है। यानी खुले आम अपने भ्रष्टाचार एवं घोटालों में भी जन-समर्थन मांग रहे हैं। स्मार्टनेस की इस दुहाई के चलते एक मामूली-से दिखने वाले व्यक्ति ने अब सिलेब्रिटी स्टेटस एवं सफल राजनेता होने की गरिमा को हासिल कर लिया है, और वह है जुगाड़ एवं जनता को गुमराह करने की कला। मैसेज यह है कि जरूरत पड़ने पर हमारे राजनेता किसी भी तरह काम निकाल लेते हैं। अब इस सोच का क्या किया जाए?

बात नए भारत एवं विकसित भारत की है, अपने देश में हर तरह के नियम-कानून है, पर उनके उल्लंघन की जैसी सुविधा यहां है, वैसी शायद ही अन्य कहीं हो। पुणे, राजकोट और दिल्ली के मामले इकलौते ऐसे प्रकरण नहीं, जिनमें सरकारी तंत्र को जवाबदेही से दूर रखने की कोशिश की गई हो। इस तरह के मामले रह-रहकर होते ही रहते हैं और उनमें बड़ी संख्या में लोग जान गंवाते हैं अथवा घायल होते हैं, लेकिन नियामक तंत्र के उन लोगों को कभी भी कठघरे में नहीं खड़ा किया जाता, जिनकी अनदेखी और लापरवाही के चलते जानलेवा घटनाएं होती रहती हैं। इसका उदाहरण है मुंबई में एक विश. लकाय होर्डिंग गिरने से कई लोगों की मौत। यह विशालकाय होर्डिंग अवैध रूप से था, लेकिन किसी को 'नजर' नहीं आ रहा था। जब यह गिर गया और उसमें कई लोगों की जान चली गई तो सरकारी तंत्र ने उससे अपना पल्ला झाड़ लिया। होर्डिंग लगवाने वाला तो गिरफ्तार हो गया, इसी तरह गेम जोन एवं बेबी केयर अस्पताल के मालिक भी सलाखों के पीछे आ गये, ले. किन नगर निकाय एवं सरकार के किसी अधिकारी-कर्मचारी को गिरफ्तार करने की आवश्यकता नहीं समझी गई। कोई नहीं जानता कि क्यों? दिल्ली के ग्यारह सौ से अधिक अस्पतालों में मात्र 190 के पास एनओसी है, यह प्रशासन तले अंधेरा नहीं तो क्या है? भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र एवं एक बड़ी आबादी वाला देश है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि सरकारी तंत्र की लापरवाही एवं भ्रष्टता से रह-रहकर हादसे होते रहें और उनमें बड़ी संख्या में लोग मरते रहें। दुर्भाग्य से अपने देश में यही हो रहा है। जब कोई बड़ी घ टना घट जाती है और उसमें अधिक संख्या में लोग मारे जाते हैं तो शोक संवेदनाओं का तांता लग जाता है और तत्काल कार्रवाई करने के नाम पर उच्चस्तरीय जांच के आदेश दे दिए जाते हैं, लेकिन कुछ समय बाद उन्हीं कारणों से वैसी ही घटना फिर सामने आती है, जैसी पहले हो चुकी होती है, इसका मतलब प्रशासन अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह ठीक से नहीं कर रहा है और व्यवसायी प्रशासन की इन्हीं कमजोरियों का फायदा उठाते हुए मौत के सौदागर बने रहते हैं। यही कारण है कि न तो हादसे कम हो रहे हैं और न ही उनमें जान गंवाने वालों की संख्या में कमी आ रही है। हादसे दुनिया में हर कहीं होते हैं, लेकिन विकसित और विकासशील देश कम से कम उनसे सबक लेते हैं और ऐसी व्यवस्था करते हैं, जिससे बार-बार एक जैसे कारणों से हादसे न हों।

लोकतंत्र एक पवित्र प्रणाली है। पवित्रता ही इसकी ताकत है। इसे पवित्रता से चलाना पड़ता है। अपवित्रता से यह कमजोर हो जाती है। ठीक इसी प्रकार अपराध के पैर कमजोर होते हैं। पर अच्छे आदमी की चुप्पी उसके पैर बन जाती है। अपराध, भ्रष्टाचार अंधेरे में दौड़ते हैं। रोशनी में लड़खड़ाकर गिर जाते हैं। हमें रोशनी बनना होगा और रोशनी भ्रष्टता एवं घोटालों से प्राप्त नहीं होती। भारत में कोई सबक सीखने को तैयार नहीं है, और यही कारण है कि विकसित देश बनने के संकल्प को साकार करना कहीं अधिक कठिन दिख रहा है। अपने देश में हर तरह के नियम-कानून हैं, राजनेताओं के बड़े-बड़े संकल्प भी है, लेकिन उनके उल्लंघन की जैसी सुविधा यहां है, वैसी शायद ही किसी विकासशील और विकसित राष्ट्र का स्वप्न देखने वाले देश में हो। भारत में लोग किस कदर कदम-कदम पर नियम-कानूनों का धडल्ले के साथ उल्लंघन करते हैं और सरकारी तंत्र में बैठे लोग उनकी मदद करने या फिर उनके अपराध को ढकने के लिए तैयार रहते हैं, इसका शर्मनाक एवं दर्दनाक उदाहरण पुणे का कार हादसा भी है। आज यह स्वीकारते कठिनाई हो रही है कि देश की कानून एवं व्यवस्था को सम्भालने वाले सभी हाथ दागदार हो गए हैं। इस मन:स्थिति के पीछे अलग-अलग कारण हो सकते हैं। दिन-प्रतिदिन जो सुनने और देखने में आ रहा है, वह पूर्ण असत्य भी नहीं है। पर हां, यह किसी ने भी नहीं सोचा कि जो हाथ प्रशासन, कानून एवं सुरक्षा की बागडोर सम्भाले हुए थे, क्या वे सब बागडोर छोड़कर अपनी जेब सम्भाल लेंगे?

आधुनिक पढ़े-लिखें से बेहतर पुराने 'गँवार'

गाँवों के पुरनिया बड़े अनुभवी और तजुर्बेकार हुआ करते थे। पहले के मकान कच्चे हुआ करते थे पर अनुभव पक्के थे अब मकान पक्के है पर अनुभव कच्चे है। आइये ३०-३५ साल पहले गांव में रहने वाले अपने पुरखों के जीवन शैली को याद करें और मन की गहराई से सोचें कि वे मानवीय आधार पर शिक्षित थे या अशिक्षित। बचपन में हम देखते थे कि हल खींचते समय यदि कोई बैल गोबर या मूत्र करने की स्थिति में होता था तो किसान कुछ देर के लिए हल चलाना बन्द करके बैल के मल-मूत्र त्यागने तक खड़ा रहता था ताकि बैल आराम से यह नित्यकर्म कर सके, यह आम चलन था। जीवों के प्रति यह गहरी संवेदना उन महान पुरखों में जन्मजात होती थी जिन्हें आजकल हम अशिक्षित कहते हैं, यह सब अभी 30-35 वर्ष पूर्व तक होता रहा । उस जमाने का देशी घी यदि आजकल के हिसाब से मूल्य लगाएं तो इतना शुद्ध होता था कि 2 हजार रुपये किलो तक बिक सकता है। और उस देसी घी को किसान विशेष कार्य के दिनों में हर दो दिन बाद आधा-आधा किलो घी अपने बैलों को पिलाता था । टटीरी नामक पक्षी अपने अंडे खुले खेत की मिट्टी पर देती है और उनको सेती है। हल चलाते समय यदि सामने कहीं कोई टटीरी चिल्लाती मिलती थी तो किसान इशारा समझ जाता था और उस अंडे वाली जगह को बिना हल जोते खाली छोड़ देता था । उस जमाने में आधुनिक शिक्षा नहीं थी । सब आस्तिक थे। दोपहर को किसान जब आराम करने का समय होता तो सबसे पहले बैलों को पानी पिलाकर चारा डालता और फिर खुद भोजन करता था । यह एक सामान्य नियम था ।बैल जब बूढ़ा हो जाता था तो उसे कसाइयों को बेचना शर्मनाक सामाजिक अपराध की श्रेणी में आता था। बुढा बैल कई सालों तक खाली बैठा चारा खाता रहता था, मरने तक उसकी सेवा होती थी। उस जमाने के तथाकथित अशिक्षित किसान का मानवीय तर्क था कि इतने सालों तक इसकी माँ का दूध पिया और इसकी कमाई खाई है,अब बुढापे में इसे कैसे छोड़ दें,कैसे कसाइयों को दे दें काट खाने के लिये ? जब बैल मर जाता तो किसान फफक-फफक कर रोता था और उन भरी दुपहरियों को याद करता था जब उसका यह वफादार मित्र हर कष्ट में उसके साथ होता था। माता-पिता को रोता देख किसान के बच्चे भी अपने बुड्ढे बैल की मौत पर रोने लगते थे।पूरा जीवन काल तक बैल अपने स्वामी किसान की मूक भाषा को समझता था कि वह क्या कहना चाह रहा है । वह पुराना भारत इतना शिक्षित और धनाढ्य था कि अपने जीवन व्यवहार में ही जीवन रस खोज लेता था,वह करोड़ों वर्ष पुरानी देव संस्कृति वाला वैभवशाली भारत था..! वह सचमुच विद्या का धनी अतुल्य भारत था। परन्तु अफसोस ! हमने अपनी देव तुल्य संस्कृति खो दी। आज जो मानव मूल्यों के विपरीत कार्य करे, वह बड़ा आदमी है। ये बड़े लोग शरीर को स्वस्थ रखने वाले दिनचर्या का पालन करने वाले को गरीब समझते हैं और सुख देने वाले संसाधनों को जुटाकर जीवनयापन करने वाले को अमीर समझते हैं। ये कितने अज्ञानी हैं कि अपने शरीर को स्वस्थ रखने वाली दिनचर्या को दु:ख समझते हैं। ये बड़े लोग सिर्फ अपने स्वार्थ को समझते हैं। पैसा ही इनके लिये सब कुछ है। उसके लिये ये मानव मूल्यों की बलि चढ़ाने में नहीं चूकते। पहले अनाज, दूध, सब्जी, फल आदि शुद्ध होते थे, आज हम डर डर कर खाते हैं। यही हमारी अविद्या रूपी शिक्षा का प्रभाव है।

आज जो मानव मूल्यों के विपरीत कार्य करे, वह बड़ा आदमी है। ये बड़े लोग शरीर को स्वस्थ रखने वाले दिनचर्या का पालन करने वाले को गरीब समझते हैं और सुख देने वाले संसाधनों को जुटाकर जीवनयापन करने वाले को अमीर समझते हैं। ये कितने अज्ञानी हैं कि अपने शरीर को स्वस्थ रखने वाली दिनचर्या को दु:ख समझते हैं। ये बड़े लोग सिर्फ अपने स्वार्थ को समझते हैं। पैसा ही इनके लिये सब कुछ है। उसके लिये ये मानव मूल्यों की बलि चढ़ाने में नहीं चूकते।



पंकज कुमार मिश्रा,

धूम्रपान छोड़ने के सिर्फ बीस मिनट के अंदर उच्च रक्तचाप में गिरावट आती है तथा बारह घंटे के बाद रक्त में कार्बन मोनोक्साइड के विषैले कणों का स्तर सामान्य हो जाता है।

कई घातक बीमारियों का जन्मदाता धूम्रपान



धूम्रपान को लेकर पिछले कई दशकों में दुनियाभर में हुए अनेक अध्ययनों के आधार पर सर्वविदित तथ्य यही है कि धूम्रपान हर दृष्टि से सेहत के लिए हानिकारक है लेकिन जब तमाम जानकारियों और तथ्यों के बावजूद हम अपने आसपास किशोरवय बच्चों को भी धूम्रपान करते देखते हैं तो स्थिति काफी चिंताजनक प्रतीत होती है। दरअसल ऐसे किशोरों के मनोमस्तिष्क में धूम्रपान को लेकर कुछ गलत धारणाएं विद्यमान होती हैं, जैसे धूम्रपान से उनके शरीर में चुस्ती-फुर्ती आती है, उनका मानसिक तनाव कम होता है, मन शांत रहता है, व्यक्तित्व आकर्षक बनता है, कब्ज की शिकायत दूर होती है आदि-आदि। तमाम वैज्ञानिक शोधों के बावजूद ऐसे व्यक्ति समझना ही नहीं चाहते कि धूम्रपान करने से उनके अंदर ऐसी कोई ताकत पैदा नहीं होने वाली कि देखते ही देखते वो किसी ऊंचे पर्वत पर छलांग लगा सकें या महाबली पवनपुत्र हनुमान की भांति विशाल समुद्र लांघ जाएं। वास्तविकता यही है कि धूम्रपान एक ऐसा धीमा जहर है, जो धीमे-धीमे इसका सेवन करने वाले व्यक्ति का दम घोंटता है। धूम्रपान शरीर में कई प्रकार की प्राणघातक बीमारियों को जन्म देता है और ऐसे व्यक्ति को धीमी गति से मृत्यु शैया तक पहुंचा देने का माध्यम बनता है। प्रतिवर्ष विश्वभर में 31 मई को 'विश्व तम्बाकू निषेध दिवस' मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य तम्बाकू सेवन के व्यापक प्रसार और नकारात्मक स्वास्थ्य प्रभावों की ओर ध्यान आकर्षित करना है, जो दुनियाभर में प्रतिवर्ष लाखों मौतों का कारण बनता है। इस वर्ष विश्व तंबाकू निषेध दिवस 'तंबाकू उद्योग के दखल से बच्चों की रक्षा करना' थीम के साथ मनाया जा रहा है ताकि भविष्य की पीढ़ियों की रक्षा की जा सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि तंबाकू के इस्तेमाल में गिरावट जारी रहे।

धूम्रपान करने वालों द्वारा सालभर में सात हजार करोड़ से ज्यादा सिगरेटें फूंक दी जाती हैं। हर साल फूंकी जाने वाली इन्हीं सिगरेटों के धुएं से वातावरण भी कितना प्रदूषित होता है, इसका अनुमान इसी से लगा सकते हैं कि इस खतरनाक धुएं से करीब 50 टन तांबा, 15 टन शीशा, 11 टन कैडमियम तथा कई अन्य खतरनाक रसायन वातावरण में घुलते हैं। हालांकि सिगरेटें महंगी होने के कारण भारत में बीड़ी का प्रचलन निम्न तथा मध्यमवर्गीय तबके में ज्यादा है और ऐसा अनुमान है कि देश में प्रतिवर्ष सौ अरब रुपये मूल्य से भी अधिक की बीडि;ां का सेवन किया जाता है। एक सरकारी अध्ययन के मुताबिक तम्बाकू सेवन से होने वाली बीमारियों के इलाज पर सालभर में करीब 1.04 लाख करोड़ रुपये खर्च हो जाते हैं। तीन दशक पूर्व प्रकाशित अपनी पुरस्कृत पुस्तक 'मौत को खुला निमंत्रण' में मैंने विस्तार से यह बताया है कि धूम्रपान वास्तव में एक ऐसा धीमा जहर है, जो हमारे शरीर में धीरे-धीरे प्राणघातक रोगों को जन्म देता है और व्यक्ति को धीमी गति से मृत्यु शैया पर पहुंचा देता है।

दुनियाभर में धूम्रपान के कारण 2019 में 77 लाख लोगों की मौत हुई, जिनमें से 17 लाख मौतें इस्केमिक हार्ट डिजीज के कारण, 16 लाख सीपीओडी के कारण, 13 लाख ट्रैकियल, ब्रोंकस और फेफड़ों के कैंसर से तथा 10 लाख स्ट्रोक के कारण हुई। रिपोर्ट के मुताबिक दुनियाभर में होने वाली मौतों में से हर 5 में से 1 पुरूष की मौत धूम्रपान के कारण हो रही है। विभिन्न सर्वेक्षणों के अनुसार माना गया है कि विकसित देशों में चालीस फीसदी से ज्यादा पुरूष और इक्कीस फीसदी से ज्यादा स्त्रियां धूम्रपान करती हैं जबकि विकासशील देशों में सिर्फ आठ फीसदी स्त्रियों को इसकी लत लगी है तथा पुरूषों की संख्या पचास फीसदी से अधिक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार तम्बाकू के सेवन के कारण प्रतिदिन करीब आठ हजार व्यक्ति फेफड़ों के कैंसर के शिकार होकर मर जाते हैं। संगठन का अनुमान है कि यदि दुनियाभर में धूम्रपान की लत ऐसे ही बढ़ती रही तो बहुत जल्द धूम्रपान के कारण पचास करोड़ लोग मारे जा चुके होंगे और अगले तीस वर्षों में केवल गरीब देशों में ही धूम्रपान से मरने वालों की संख्या दस लाख से बढ़कर सत्तर लाख तक पहुंच जाएगी। संगठन का अनुमान है कि प्रतिवर्ष विश्वभर में आठ हजार से ज्यादा नवजात शिशु धूम्रपान की वजह से असमय काल के ग्रास बन जाते हैं। आंकड़ों से पता चलता है कि सभी प्रकार के कैंसर में से करीब 40 फीसदी का कारण धूम्रपान ही होता है। डब्ल्यूएचओ का कहना है कि कैंसर, हृदय रोग, सांस की बीमारी, डायबिटीज इत्यादि बीमारियों में भी धूम्रपान काफी खतरनाक हो सकता है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को धूम्रपान से बचना चाहिए।

बहरहाल, धूम्रपान छोड़ने के फायदों के बारे में विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि धूम्रपान छोड़ने के सिर्फ बीस मिनट के अंदर उच्च रक्तचाप में गिरावट आती है तथा बारह घंटे के बाद रक्त में कार्बन मा. नोक्साइड के विषैले कणों का स्तर सामान्य हो जाता है। दो से बारह सप्ताह में फेफड़ों की कार्यक्षमता में तेजी से वृद्धि होती है तथा एक से नौ माह में खांसी तथा श्वसन संबंधी समस्याएं कम हो जाती हैं। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक मनुष्य के फेफड़ों में जादुई क्षमता होती है, जो धूम्रपान से होने वाले कुछ नुकसान को स्वयं ठीक कर देती है और जो व्यक्ति धूम्रपान छोड़ देते हैं, उनकी चालीस फीसदी कोशिकाएं ऐसे लोगों की तरह ही हो जाती हैं, जिन्होंने कभी धूम्रपान नहीं किया।

नशे में तबाह होती पीढ़ी को बचाना होगा

बेशक 31 मई 2022 को विश्व तम्बाकू विरोधी दिवस मनाया जा रहा है मगर ऐसे दिवस को मनाने की उपयोगिता तभी है जब नशे की अंधी गलियों में भटक चुके युवाओं को बाहर निकालना विश्व की हर सरकार का नैतिक एवं प्राथमिक कर्तव्य हो, क्योंकि युवा पीढ़ी नशे की गुलाम हो चुकी है। विश्व की गम्भीर समस्याओं में प्रमुख है तम्बाकू और उससे जुड़े नशीले पदार्थों का उत्पादन, तस्करी और सेवन में निरन्तर वृद्धि होना। नई पीढ़ी इस जाल में बुरी तरह कैद हो चुकी है। आज हर तीसरा व्यक्ति विशेषत: महिलाएं किसी-न-किसी रूप में तम्बाकू की आदी हो चुकी है। बीड़ी-सिगरेट के अलावा तम्बाकू के छोटे-छोटे पाउचों से लेकर तेज मादक पदार्थों, औषधियों तक की सहज उपलब्धता इस आदत को बढ़ाने का प्रमुख कारण है। इस दीवानगी को ओढ़ने के लिए प्रचार माध्यमों ने भी भटकाया है। सरकार की नीतियां भी दोगली है। लेकिन तेलंगाना सरकार ने एक सराहनीय कदम उठाते हुए तंबाकू और निकोटीन युक्त गुटखा व पान मसाला पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का फैसला किया है, वह सुखद है। ऐसे गुटखों या पान मसालों के निर्माण, भंडारण, वितरण, परिवहन और बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लग गया है। हालांकि, अभी यह पाबंदी एक वर्ष के लिए है, शायद आगे इसकी समीक्षा होगी और उसके बाद राज्य सरकार स्थायी प्रतिबंध का फैसला करेगी। ऐसे निर्णय केन्द्र सरकार एवं विभिन्न प्रांतों की सरकारों को भी लेने चाहिए। क्योंकि एक नशेड़ी पीढ़ी का देश कैसे आदर्श हो सकता है? कैसे स्वस्थ हो सकता है? कैसे प्रगतिशील हो सकता है? इस दुर्व्यसन के आदी लोग सुधरने को तैयार नहीं हैं। ऐसे में, तेलंगाना में लगा प्रतिबंध कितना कारगर होगा, यह देखने वाली बात है। तेलंगाना अगर अपनी सीमा में प्रतिबंध को कड़ाई से लागू करे, तो उसके पड़ोसी राज्यों तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र को भी सहयोग के लिए खड़ा होना पड़ेगा। नशे की गंभीरता एवं विकरालता को देखते हुए साल 1987 में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सदस्य देशों ने एक प्रस्ताव पारित किया और हर 31 मई को विश्व तम्बाकू विरोधी दिवस मनाने का फैसला किया गया।

आज छोटे-छोटे बच्चे एवं महिलाएं नशे के आदी हो चुकी हैं। वे ऐसे नशे करती है कि रुह कांपती है। हर साल लाखों लोग नशे के कारण अपना जीवन दांव पर लगा रहे हैं। नशा आज एक फैशन बन चुका है। पूरे विश्व के लोगों को तंबाकू मुक्त और स्वस्थ बनाने के लिये तथा सभी स्वास्थ्य खतरों से बचाने के लिये तंबाकू चबाने या धूम्रपान के द्वारा होने वाले सभी परेशानियों और स्वास्थ्य जटिलताओं से लोगों को आसानी से जागरूक बनाने के लिये इस दिवस की महत्वपूर्ण भूमिका है। लेकिन यह विडम्बनापूर्ण है कि सरकारों के लिये यह दिवस कोरा आयोजनात्मक है, प्रयोजनात्मक नहीं। क्योंकि सरकार विवेक से नहीं, स्वार्थ से काम ले रही है। शराबबन्दी का नारा देती है, नशे की बुराइयों से लोगों को आगाह भी करती है और शराब, तम्बाकू का उत्पादन भी बढ़ा रही है। राजस्व प्राप्ति के लिए जनता की जिन्दगी से खेलना क्या किसी लोककल्याणकारी सरकार का काम होना चाहिए? भारत में गुटखा सहित धुआं रहित तंबाकू का उपयोग एक खतरनाक कुचलन है, जिससे गंभीर किस्म की बीमारियां होती हैं। विशेष रूप से गुटखा से कैंसर का खतरा होता है और इसी वजह से साल 2002 से ही गुटखा पर नियंत्रण के प्रयास चलते रहे हैं। और साल 2012 से भारतीय राज्यों द्वारा प्रतिबंधित होने के बावजूद गुटखा व्यापक रूप से उपयोग में है।

गुटखा लॉबी देश भर में बहुत मजबूत है और इससे सरकारों व उनमें शामिल लोगों को गलत ढंग से भारी कमाई होती है। सबसे पहला राज्य मध्य प्रदेश है, जिसने गुटखा पर प्रतिबंध लगाया था, पर क्या वहां सफलता मिली? बिहार, गुजरात जैसे राज्य, जहां कहने को तो शराब प्रतिबंधित है, पर क्या वहां शराब का मिलना बंद हो गया है? ठीक इसी तरह से गुटखा के साथ हुआ है। लगातार चेतावनियों व विज्ञापनों के बावजूद गुटखा या तंबाकू का सेवन घट नहीं रहा है।

नशे की संस्कृति युवा पीढ़ी को गुमराह कर रही है। अगर यही प्रवृत्ति रही तो सरकार, सेना और समाज के ऊंचे पदों के लिए शरीर और दिमाग से स्वस्थ व्यक्ति नहीं मिलेंगे। नशे की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण हम एक स्वस्थ नहीं, बल्कि बीमार राष्ट्र एवं समाज का ही निर्माण कर रहे हैं।

प्रसिद्ध फुटबाल खिलाड़ी मैराडोना, पॉप संगीत गायक एल्विस प्रिंसले, तेज धावक बेन जॉनसन, युवकों का चहेता गायक माईकल जैक्सन, ऐसे कितने ही खिलाड़ी, गायक, सिनेमा कलाकार नशे की आदत से या तो अपनी जीवन लीला समाप्त कर चुके हैं या बरबाद हो चुके हैं। नशे की यह जमीन कितने-कितने आसमान खा गई। विश्वस्तर की ये प्रतिभाएं कीर्तिमान तो स्थापित कर सकती हैं, पर नई पीढ़ी के लिए स्वस्थ लाश बने जी रहे हैं पौरुषहीन भीड़ का अंग विरासत नहीं छोड़ पा रही हैं। नशे की ओर बन कर। डब्ल्यूएचओ के अनुसार धूम्रपान की बढ़ रही युवापीढ़ी बौद्धिक रूप से दरिद्र बन लत से हर साल लगभग 60 लाख लोग मारे जाएगी। गुटखों और पान मसालों से जुड़ी जा रहे हैं और इनमें से अधिकतर मौतें कम समस्याओं को अभी भी हम गंभीरता से नहीं तथा मध्यम आय वाले देशों में हो रही हैं। ले रहे हैं। भारत में जनसंख्या-आधारित कैंसर रजिस्ट्री में पाया गया कि 55 प्रतिशत कैंसर तंबाकू के उपयोग से संबंधित थे। भारत तंबाकू उत्पादों का दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक है। भारत में तंबाकू छोड़ने की दर सबसे कम है, यहां सिर्फ 20 प्रतिशत पुरुष तंबाकू के दुर्व्यसन को छोड़ पाते हैं। जीवन का माप सफलता नहीं, सार्थकता होती है। सफलता तो गलत तरीकों से भी प्राप्त की जा सकती है। जिनको शरीर की ताकत खैरात में मिली हो वे जीवन की लड़ाई कैसे लड़ सकते हैं? तंबाकू सेवन कई सारी बीमारियों का कारण बनता है जैसे दीर्घकालिक अवरोधक फेफड़ों संबंधी बीमारी (सीओपीडी), फेफड़े का कैंसर, हृदयघात, स्ट्रोक, स्थायी दिल की बीमारी, वातस्फीति, विभिन्न प्रकार के कैंसर आदि। तंबाकू का सेवन कई रूपों में किया जा सकता है जैसे सिगरेट, सिगार, बीड़ी, मलाईदार तंबाकू के रंग की वस्तु (टूथ पेस्ट), क्रिटेक्स, पाईप्स, गुटका, तंबाकू चबाना, सुर्ती-खैनी (हाथ से मल के खाने वाला तंबाकू), तंबाकू के रंग की वस्तु, जल पाईप्स, स्नस आदि। कितने ही परिवारों की सुख-शांति ये तम्बाकू उत्पाद नष्ट कर रहे हैं। बूढ़े मां-बाप की दवा नहीं, बच्चों के लिए कपड़े-किताब नहीं, पत्नी के गले में मंगलसूत्र नहीं, चूल्हे पर दाल-रोटी नहीं, पर नशा चाहिए। करोड़ों लोग अपनी अमूल्य देह में बीमार फेफड़े और जिगर लिए एक जिन्दा मानकर अक्सर नवयुवक एवं महिलाएं अपनाते हैं और दूसरों के सामने दिखाते हैं। इससे प्रजनन शक्ति कम हो जाती है। यदि कोई गर्भवती महिला धूम्रपान करती है तो या तो शिशु की मृत्यु हो जाती है या फिर कोई विकृति उत्पन्न हो जाती है। लंदन के मेडिकल जर्नल द्वारा किये गये नए अध्ययन में पाया गया कि धूम्रपान करने वाले लोगों के आसपास रहने से भी गर्भ में पल रहे बच्चे में विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के डॉ. जोनाथन विनिकॉफ के अनुसार, गर्भावस्था के दौरान माता-पिता दोनों को स्मोकिंग से दूर रहना चाहिए। स्कूलों के बाहर नशीले पदार्थों की धडल्ले से बिक्री होती है, किशोर पीढ़ी धुए में अपनी जिन्दगी तबाह कर रही है।

हजारों-लाखों लोग अपने लाभ के लिए नशे के व्यापार में लगे हुए हैं और राष्ट्र के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। चमड़े के फीते के लिए भैंस मारने जैसा अपराध कर रहे हैं। बढ़ती तम्बाकू प्रचलन की समस्या विश्व की दूसरी समस्याओं में सबसे देरी से जुड़कर सबसे भयंकर रूप से मुखर हुई है। लगता है विश्व जनसंख्या का अच्छा खासा भाग नशीले पदार्थों के सेवन का आदी हो चुका है। अगर आंकड़ों को सम्मुख रखकर विश्व मानचित्र (ग्लोब) को देखें, तो हमें सारा ग्लोब नशे में झूमता दिखाई देगा।

घूँघट की बगावत

02 जून 2024

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित
हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

8



लोकसभा चुनाव-2024



राजनीतिक विसंगतियों से दूर रहे नई लोकसभा

लोकतंत्र में जनता की भागीदारी केवल वोट देने तक सीमित नहीं होनी चाहिए। जनता के स्वतंत्र लिखने, बोलने और करने की स्वतंत्रता का हनन करने वाले शासकों ने इस शासन प्रणाली को ही धुंधला दिया है। शासक ही सोचेगा, शासक ही बोलेगा और शासक ही करेगा- ऐसी घोषणाओं के द्वारा शासक ने जनता को पंगु, अशक्त और निष्क्रिय बनाया है इसका खासतौर से मध्यवर्ग, कामकाजी प्रोफेशनल्स और युवा आबादी में गहरा असंतोष है।

18वीं लोकसभा के गठन के लिये हो रहे चुनाव अब अन्तिम चरण में हैं। अब चुनाव परिणामों पर सबकी निगाहें लगी है, इसी के साथ नयी लोकसभा कैसी हो, किस तरह से राजनीतिक विसंगतियों से उसे बचाकर एक नये आदर्श लोकसभा का गठन हो, ताकि आजादी का अमृतकाल स्वर्णिम एवं सार्थक बन सके। वर्ष 2047 तक भारत की यात्रा परिवर्तन, संभावनाओं एवं अवसरों से भरी है। व्यापक लोकतांत्रिक सुधारों, समग्र विकास, आर्थिक संभावनाओं का लाभ उठाकर एक समृद्ध, शक्तिशाली एवं विकसित राष्ट्र का सपना साकार किया जा सकता है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये प्रतिबद्धता, रणनीतिक योजनाओं, सही समन्वय एवं नयी लोकसभा के सदस्यों के आपसी संवाद की अपेक्षा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अमृतकाल की पूर्णता तक पहुंचने से पहले देश को विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया है। वर्तमान में भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। लोकतंत्र एक जीवित तंत्र है, जिसमें सबको समान रूप से अपनी-अपनी मान्यताओं के अनुसार चलने की पूरी स्वतंत्रता होती है। लोकतंत्र की नींव जनता के मतों पर टिकी होती है। नागरिकों की आशा-आकांक्षाओं के अनुरूप प्रशासन देने वाला, संसदीय प्रणाली पर आधारित इसका मजबूत संविधान है। लेकिन लोकतांत्रिक मूल्यों के टूटते-बिखरते की स्थितियों और राजनीतिक प्रक्रिया के कारण आम लोगों में अरुचि और अलगाव बहुत साफ दिखाई देता है, इसके कुछ और भी अनेक कारणों में मुख्य है- समानता लोकतंत्र का हृदय है, लेकिन असमानता ही चहूं ओर दिखाई दे रही है। वोटों के गलियारे में सत्ता के सिंहासन तक पहुंचने की होड और येन-केन-प्रकारेण वोट बटोरने के मनोभाव ने इस उन्नत शासन प्रणाली को कमजोर किया है, जिसकी झलक इन चुनावों में हमने बढ़-चढ़ कर देखी है।

नई संसद को लेकर विमर्श प्रारंभ हो गया है और होना भी चाहिए। यह भी याद रखना जरूरी है कि आज भारत का हर नागरिक विश्व में अपने देश के सम्मान को लेकर गौरवान्वित है। देश के भविष्य को लेकर वह काफी आशावान है। दुनिया की तीसरी आर्थिक व्यवस्था बनने को लेकर उत्साहित है। इनकी आशाओं पर खरा उतरने की चुनौती आम चुनावों में सफल होकर प्रधानमंत्री और सांसद बनने वालों के सामने है। इसमें दो राय नहीं कि सकारात्मक नेतृत्व ही व्यक्ति और राष्ट्र को नई प्रेरणा देता है। ऐसे में नवनिर्वाचित सांसदों को सक्रिय संवाद की परम्परा को पुनर्जीवित करने का प्रयास दलगत राजनीति से ऊपर उठकर करने की अपेक्षा है। इसी से निर्वाचित प्रतिनिधियों की साख एवं स्वीकार्यता बढ़ेगी एवं इसीसे भारत के लोकतंत्र को अपेक्षित गरिमा एवं जीवंतता मिल सकेगी। नयी गठित होने वाली लोकसभा के सामने यह बड़ी चुनौती है। यह चुनौती बड़ी इसलिये है कि राजनीति का वह युग बीत चुका जब राजनीतिज्ञ आदर्शों पर चलते थे। आज हम राजनीतिक दलों की विभीषिका और उसकी अतियों से ग्रस्त होकर राष्ट्र के मूल्यों को भूल गए हैं। भारतीय राजनीति उथल-पुथल के दौर से गुजर रही है। चारों ओर भ्रम और मायाजाल का वातावरण है। भ्रष्टाचार और घोटालों के शोर और किस्म-किस्म के आरोपों के बीच देश ने अपनी नैतिक एवं चारित्रिक गरिमा को खोया है। मुद्दों की जगह अभद्र टिप्पणियों ने ली है। व्यक्तिगत रूप से छींटाकशी की जा रही है। कई राजनीतिक दल तो पारिवारिक उत्थान और उन्नयन के लिये व्यावसायिक संगठन बन चुके हैं। सामाजिक एकता की बात कौन करता है। आज देश में भारतीय कोई नहीं नजर आ रहा क्योंकि उत्तर भारतीय, दक्षिण भारतीय, महाराष्ट्रीयन, पंजाबी, तमिल की पहचान भारतीयता पर हावी हो चुकी है। वोट बैंक की राजनीति ने सामाजिक व्यवस्था को क्षत-विक्षत करके रख दिया है। ऐसा लगता है कि सब चोर एक साथ शोर मचा रहे हैं और देश की जनता बोर हो चुकी हैं। लोकतंत्र में जनता की भागीदारी केवल वोट देने तक सीमित नहीं होनी चाहिए। जनता के स्वतंत्र लिखने, बोलने और करने की स्वतंत्रता का हनन करने वाले शासकों ने इस शासन प्रणाली को ही धुंधला दिया है। शासक ही सोचेगा, शासक ही बोलेगा और शासक ही करेगा- ऐसी घोषणाओं के द्वारा शासक ने जनता को पंगु, अशक्त और निष्क्रिय बनाया है इसका खासतौर से मध्यवर्ग, कामकाजी प्रोफेशनल्स और युवा आबादी में गहरा असंतोष है। शायद यही वजह है कि आज मुश्किल से ही कोई ऐसा व्यक्ति मिलता है, जिसकी राजनीतिक प्रक्रिया का हिस्सा बनने में कोई दिल. चस्पी हो। गौरतलब है कि शहरीकरण और इकनॉमिक ग्रोथ के साथ-साथ ऐसे लोगों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। एक तरह से लोकतंत्र जैसी स्वस्थ और आदर्श शासन प्रणाली भी प्रश्नों के घेरे में है। अब आवश्यकता इस बात की भी है कि देश में लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास हो और मतदान के साथ-साथ नागरिक सजगता का भी विकास हो। लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ बनाने, चुनाव की खामियों को दूर करने एवं नये लीडर उभारने के प्रयास करने होंगे। आम जनता की सजगता नयी बनने वाली सरकार एवं नये सांसदों की नीतियां और नियत क्या है इस पर भी केन्द्रित हो। वोट देने के बाद हमारे शासक कर क्या रहे हैं, इस पर नजर रखे बिना सजगता संभव नहीं है। सोशल मीडिया में भीड़ है, वह तख्ता पलट तो कर सकती है लेकिन उसके बाद का काम नहीं कर सकती। लिहाजा मतदान पहला कदम है अंतिम नहीं। लोकतंत्र को सशक्त बनाने के लिये जरूरी है कि ज्यादा से ज्यादा लोगों की भागीदारी से सरकार बनें और सही तरीके से चले भी। अच्छे लोग राजनीति में रूचि नहीं रखते। नागरिक सजगता की कमी इसी समझदार वर्ग में भी कम नहीं है। लोकसभा में अपराधियों की बढ़ती संख्या भी चिंता का विषय है। चुनाव आयोग पार्टियों को पंजीकृत तो कर सकता है लेकिन नियंत्रित नहीं। यह काम जागरूक नागरिक ही कर सकतें है अत: वे उठें और अपना कर्तव्य निभाएं। निष्क्रिय राजनीतिक दलों का पंजीकरण रद्द होना चाहिए। लोकतंत्र की यह दुर्बलता है कि सांसदों-विधायकों का चुनाव अर्हता, गुणवत्ता एवं योग्यता के आधार पर न होकर, दल या संस्था के आधार पर होता है। इससे राजनीति स्वस्थ नहीं बन सकती और न ही राजनीति में स्वस्थ, योग्य एवं प्रतिभासंपन्न उम्मीदवारों का चयन होता है। सही व्यक्ति की खोज वर्तमान राजनीति की सबसे बड़ी जरूरत है। स्वस्थ राजनीति में ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता इसलिये भी है ताकि लोकतंत्र को हांकने वाला निष्पक्ष हो, सक्षम हो, सुदृढ़ हो, स्पष्ट एवं सर्वजन हिताय का लक्ष्य लेकर चल सके। ऐसी व्यवस्था भी नियोजित की जानी चाहिए है जिसमें स्वतंत्र विचारों वाले जागरूक नागरिकों द्वारा हर सरकार के कामकाज का मूल्यांकन किया जाए। यह उन्हें अपनी चुनावी घोषणाओं या जीतने के बाद किए गए वायदों के प्रति उत्तरदायी बनाएगा। हमें ऐसे मंच तैयार करने चाहिए जो भारत के उन युवाओं, प्रफेशनल्स और ऊर्जावान नागरिकों को एक साथ लाएं और आपस में जुड़ने का अवसर दें, जो इस देश की तस्वीर बदलना तो चाहते हैं लेकिन ऐसा कर नहीं पाते क्योंकि उनके पास मंच नहीं है। भावी नेतृत्व को तैयार करने के लिए हमें उनकी ऊर्जा को सही चौनल देने की पहल करनी होगी। यही युवा, सक्रिय नागरिक और प्रफेशनल अपने पेशे, अपने तौर-तरीकों और नागरिकों मूल्यों की वजह से दूसरों के लिए रोल मॉडल की भूमिका निभायेंगे। यही लोग अगली पीढ़ी के लिए पथ-प्रदर्शक बन जायेंगे। हमें भारत के विशाल प्रांगण में हर कोने में ऐसे लोगों की तलाश करनी होगी। ऐसे लोगों की तलाश और उन्हें लोकतंत्र के प्रशिक्षण का समुचित प्रबंध होना जरूरी है। लोकतंत्र की सुदृढ़ता के लिये और नये लीडर तलाशने के लिये जरूरी है कि राजनीति के प्रशिक्षण का उपक्रम विभिन्न स्तरों पर संचालित होना चाहिए। न्यूनतम योग्यता एवं न्यूनतम प्रशिक्षण तय होना चाहिए। राष्ट्रीय स्तर पर कृषि, ग्रामीण रोजगार, शिक्षा, वित्तीय अनुशासन, स्वास्थ्य और कुपोषण, जवाबदेही और पारदर्शिता, चुनाव और पुलिस सुधार, मानवाधिकारों की रक्षा और संसाधनों का बराबर इनका मिशन होना चाहिए। इसलिए परिवर्तन के लिए पहले ऐसे लीडर तैयार करने होंगे। सेमिनारों, वाद-विवादों और महत्वपूर्ण मुद्दों पर राय मांगकर उनकी पहचान की जा सकती है। लीडरों का सशक्तीकरण करें, ताकि वे बदलाव के वाहक बन सकें। ऐसे दूसरे संगठनों और दबाव समूहों की पहचान करें जो अराजनीतिक और अनौपचारिक तंत्र के हिस्से हों, जैसे एनजीओ और उन्हें नीतियों के निर्माण और उनके आकलन में सहभागी बनाएं।



पेड़ लगाओ

बहुत किया मनचाहा तूने,
अब है तेरी बारी।
जीवो को मारा है तूने,
तुझे पड़ेगा भारी।
तुझे झेलनी होगी मौसम,
की ये मारा मारी।
पेड़ों को काटा है तूने,
तपी धरा है सारी।।
गर्मी का तांडव झेलेगा,
ये कर्मों की भरनी।
क्यों हाहाकार मचाया है,
ये है तेरी करनी।
अभी तो शुरूआत हुई है,
तुझे बहुत है सहना।
मान भूल को अपनी मानुष,
नहीं पड़े फिर कहना।।

सीमा रंगा इन्द्रा

चालक के अभाव में खड़े हैं कूड़ा वाहन

बस्ती (जीकेबी)। कूड़ा उठाने के नाम पर महज खानापूर्ति हो रही है। गलियों और मुख्य चौराहों पर रखे गए कूड़ेदान का भी अता-पता नहीं है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत डोर-टू-डोर कूड़ा कलेक्शन के लिए चार माह पहले नगर पालिका को करीब 50 लाख रुपये की लागत से कूड़ादान से लैस नौ वाहन मिले हैं, लेकिन चालक की कमी से ये सभी खड़े-खड़े कबाड़ हो रहे हैं।

शासन से निर्धारित फर्म से सचल कूड़ादान वाले वाहन की खरीद की गई थी। प्रत्येक की लागत लगभग सात लाख रुपये बताई गई है। नौ वाहनों की खरीद पर करीब 50 लाख रुपये खर्च आया। इनकी खरीद डोर-टू-डोर कूड़ा कलेक्शन के लिए की गई, लेकिन ये सड़कों पर नजर नहीं आ रहे हैं। चार माह से ये नगर पालिका परिसर में धूल फांक रहे हैं। इसके पीछे नगर पालिका के अधिकारियों की दलील है कि चालकों की नियुक्ति नहीं होने से समस्या आ रही है। सफाई निरीक्षक दिनेश वर्मा ने बताया कि प्रत्येक वाहन में चालक समेत दो सफाई कर्मियों की जरूरत होगी। ईओ सत्येंद्र सिंह के अनुसार नियुक्ति के लिए निर्धारित फर्म की ओर से टेंडर की प्रक्रिया जारी है। चुनाव बाद यह प्रक्रिया पूरी होगी। अभी घरों से कूड़ा का कलेक्टशन हाथ ट्रॉली और पुराने छोटे वाहनों से हो रहा है। जल्द ही नए वाहनों को प्रयोग में लाया जाएगा। पंजीयन परिवहन विभाग से हो गया है।



छह साल में नहीं बन सका कूड़ा डंपिंग ग्राउंड

स्वच्छ भारत मिशन को छह साल पूरे हो गए, लेकिन शहर से रोजाना निकल रहे करीब 70 टन कूड़ा निस्तारण की यहां कोई व्यवस्था नहीं है। कूड़ा खुले में फेंका जा रहा है। सड़कों पर सफाई हो रही है, कूड़ा उठान की व्यवस्था है, लेकिन कूड़ा प्रबंधन की उचित व्यवस्था न होने से स्वच्छता अभियान परवान नहीं चढ़ पा रही। कोइलपुरा में भूमि चिह्नित हैं जहां कूड़ा निस्तारण केंद्र बनना है, लेकिन मामला तकनीकी पेंच में फंसा है। ऐसे में कूड़ा वहीं पर फेंक कर कर्मी चले आते हैं।



घूँघट की बगावत (हिन्दी साप्ताहिक) द्वारा जनहित में जारी

प्रिय पाठकों,

इस अंक में प्रकाशित सभी अग्रलेख, कथा–लघु कथा, कविता, व्यंग्य, विचार विमर्श लेखकों एवं विचारकों की अपनी कल्पना प्रसूति हैं। त्रुटियां मानवीय स्वभाव का अंग हैं जिनकी ओर ध्यान आकृष्ट करना एक जागरूक पाठक की विशेषता होती है।

अतः आप सभी सुधी विज्ञजनों, से ऐसी अपेक्षा की जाती है कि आप अपने पत्रों के माध्यम से इस अंक में प्रकाशित त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट भी समय–समय पर कराते रहें ताकि उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति से बचा जा सके।

विवाद की स्थिति में न्यायालय, गोरखपुर का निर्णय अंतिम व मान्य होगा।

–व्यवस्थापक

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकजधर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस, निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45 बादशाहबाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित। सम्पादक–पंकज धर द्विवेदी सम्पर्क सूत्र– e-mail- ghoonghatkibagawat37@gmail.com